दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

वर्ष 03, अंक 229 | ग्वालियर बुधवार 26 अगस्त 2020 | pushpanjalitoday@gmail.com | मूल्य 01, रुपए, पृष्ठ 8

कोरोना से मौतों की संख्या 60 हजार के करीब, 24 लाख से ऊपर ठीक हुए

नई दिल्ली। देशभर में कोरोना संक्रमण से मंगलवार रात 10 बजे तक 59,593 लोगों की मौत हो चुकी थी। इस बीमारी ने देश में अब तक 32 लाख 28 हजार 365 लोगों को अपनी चपेट में लिया है। मंगलवार को 61,242 लोग ठीक हुए और 64,484 नए संक्रमित मिले। देश में 7 लाख 3 हजार 861 एक्टिव मामले हैं। पिछले 2 दिनों से लगातार एक्टिव मामलों की संख्या कम हो रही है। महाराष्ट्र तमिलनाडु आंध्रप्रदेश कर्नाटक उत्तर प्रदेश ऐसे राज्य हैं जहां प्रतिदिन 5000 से ऊपर नए संक्रमित मरीज मिल रहे हैं। महाराष्ट्र में मंगलवार को 10,425, तमिलनाडु में 5951, आंध्रप्रदेश में 9927, कर्नाटक में 8161 और उत्तरप्रदेश में 5006 नए संक्रमित मरीज मिले। मरीजों के मिलने की रफ्तार पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, ओडिशा, केरल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, असम जैसे राज्यों में भी तेज है। दिल्ली में रिकवरी रेट 90त्न से ऊपर है। इन राज्यों में देश के लगभग 90त्न नए संक्रमित मरीज मिल रहे हैं। इसके अलावा कुछ छोटे राज्यों में भी संक्रमण तेजी से फैल रहा है। बाकी राज्यों की तुलना में इन राज्यों में अधिक संख्या में मरीजों के मिलने के कारण देश में कोरोना का प्रसार दुनिया में सबसे तेज हो गया है। बीते लगभग 18 दिन से भारत में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या प्रतिदिन दुनिया में सर्वाधिक मिल रही है हालांकि संक्रमण के लिहाज से भारत अभी भी अमेरिका और ब्राजील से पीछे है। लेकिन जल्द ही भारत ब्राजील को पीछे छोड़ देगा। भारत में मृत्यु दर भी घटकर 2त्न से नीचे आ गई है। संक्रमित मरीजों की संख्या में

वृद्धि का कारण प्रतिदिन होने वाले टेस्ट हैं। वर्तमान में देश में प्रतिदिन सवा नौ लाख से अधिक कोरोनावायरस टेस्ट हो रहे हैं जिसके कारण इतनी अधिक संख्या में मरीज मिल रहे हैं। शीघ्र ही प्रतिदिन 10 लाख के करीब टेस्ट किए जाएंगे जिससे तस्वीर और स्पष्ट हो जाएगी। विशेषज्ञों का कहना है कि प्रतिदिन 20 लाख टेस्ट करने से 10 दिन के भीतर कोरोना की वास्तविक स्थिति का पता चल जाएगा और इस पर नियंत्रण होना भी शुरू हो जाएगा। इस बीच दुनियाभर में कोरोना को लेकर वैक्सीन पर शोध जारी है। भारत में भी इस दिशा में ट्रायल चल रहे हैं लेकिन अभी तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं आया है जिसका उपयोग भारत में बड़े पैमाने पर हो सके। रूस और चीन जैसे देशों ने कोरोना के वैक्सीन बनाने का दावा किया है लेकिन इसका उपयोग फिलहाल वहां की जनसंख्या पर किया जाएगा। इन दोनों देशों ने जिस जल्दबाजी में कोरोना वैक्सीन बनाया है उससे इस वैक्सीन की प्रभावशीलता को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि राहत की बात यह है कि देश के अनेक हिस्सों में कोरोना के प्रति एंटीबॉडी डिवेलप हो रही है। अनेक शहरों में सीरो सर्वे से यह बात उभरकर सामने आई है कि जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में कोरोना के प्रति लड़ने की क्षमता पैदा हो चुकी है।

अंचल में कोरोना के मरीज 9 हजार के पार

ग्वालियर। लॉकडाउन हटने के साथ ही अंचल में कोरोना सुरसा की तरह पैर पसारने लगा है! कोरोना गाइडलाइन का उल्लंघन होने के कारण मरीज भी तेजी से बढ़ते जा रहे हैं अंचल में अब तक कोरोना के 9000 से अधिक मामले सामने आ चुके हैं वहीं 90 लोग कोरोना की चपेट में आकर अपनी जान गंवा चुके हैं! पुलिस तथा प्रशासन की सुस्ती के कारण अब लोग खुलेआम कोरोनावायरस इन का उल्लंघन कर रहे हैं जिसके चलते कोरोना संक्रमण भी तेजी से फैलता जा रहा है! ग्वालियर में अब तक 4773 कोरोना संक्रमण के मामले सामने आ चुके हैं वहीं 57 लोगों की मौत हो चुकी है भिंड में 565 कोरोना संक्रमित हो चुके हैं और 5 लोगों की मौत हो चुकी है वहीं मुरैना में कोरोना संक्रमण मरीजों की संख्या दो हजार के करीब हो गई है और 14 लोग मौत के मुंह में जा चुके हैं इसी प्रकार दतिया में 531 मामले कोरोना के सामने आए और 5 लोग अब तक मर चुके हैं! वही शिवपुरी जिले में अभी तक 793 कोरोना के के सामने आ चुके हैं और छह लोगों की मौत हो चुकी है शिवपुर में अब तक 438 कोरोना संक्रमण के मामले सामने आए हैं और 3 लोगों की मौत हो चुकी है! लोगों की लापरवाही के अलावा राजनीतिक लाभ के लिए राजनेता भी खुलेआम कोरोना गाइडलाइन का उल्लंघन कर रहे हैं! बाजारों में तो सुरक्षित दूरी पूरी तरह से समाप्त होती नजर आ रही है और लोग बेफिक्र होकर बिना मास्क लगाए सड़कों पर घूमते नजर आ रहे हैं! पुलिस तथा प्रशासन भी अब कोरोना गाइडलाइन का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कोई सख्त कार्यवाही नहीं कर रहा है जिसके चलते कोरोना तेजी से बढ़ता जा रहा है! ग्वालियर में पिछले 3 दिन तक चले भा जा पा के महा सदस्यता अभियान के दौरान तो कोरोना गाइडलाइन की खोलकर धज्जियां उड़ा इस लापरवाही का खामियाजा शहरवासियों को ही भुगतना पड़ेगा और आने वाले दिनों में अब कोरोना के मरीजों की संख्या और बढ़ सकती है! कोरोना के अधिक मामले सामने ना आए इसके लिए सैंपल भी कम लिए जा रहे हैं अगर सैंपल लेने की गति बढ़ा दी जाए ते एक बार कोरोनावायरस शहर में फिर हो सकता है!

मप्र को 11,427 करोड़ की 45 सड़क परियोजनाओं की सौगात

केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री नितिन गडकरी ने दी सौगात

भोपाल। मध्यप्रदेश को केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को 45 सड़क परियोजनाओं की सौगात दी है। ये सड़क परियोजनाएं लगभग साढ़े 11 हजार करोड़ रुपये की लागत की है।गडकरी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। शिलान्यास एवं लोकार्पण कार्यक्रम की मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अध्यक्षता की। मंत्री गडकरी ने जिन 45 परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया है, उनमें 19 परियोजनाओं का शिलान्यास और 26 कार्यों का लोकार्पण शामिल है। शिलान्यास व लोकार्पण कार्यक्रम में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ.थावरचंद गहलोत, पंचायत राज, ग्रामीण विकास, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पर्यटन एवं संस्कृति प्रहलाद सिंह पटेल, केन्द्रीय इस्पात राज्य मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री वीके सिंह सहित मध्यप्रदेश शासन के मंत्री, परिवोजना क्षेत्र से जुड़े सांसद एवं विधायक भी शामिल रहे। ये सड़क परियोजनाएं राज्य के लगभग 49 विधानसभा क्षेत्रों से होकर गुजरने वाली है।इस राजनीतिक दृष्टि से भी काफी अहम माना जा रहा है। ऐसा इसकारण क्योंकि ये सड़क परियोजनाएं जिन क्षेत्रों से जुड़ी है,उनमें से कई क्षेत्रों में आगामी समय में विधानसभा के उप-चुनाव भी होने वाले हैं।

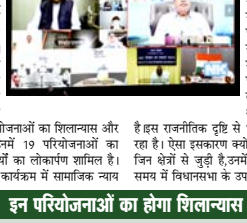

इन परियोजनाओं का होगा शिलान्यास

- इंदौर-बैतूल सेक्शन के क्षिप्रा नदी पर पुल, लागत 60 करोड़ रुपये।
- इंदौर-बैतूल राष्ट्रीय राजमार्ग 47, विस्तार सड़क के सुदृढ़ीकरण के काम
- इंदौर-हरदा सेक्शन फोन लेन चौड़ीकरण ननासा-पिडगांव, लागत 867 करोड़ रुपये। लोकार्पण
- भोपाल-सांची सेक्शन में दो लेन सड़क, राष्ट्रीय राजमार्ग 146, लागत 167 करोड़ रुपये, 54 किलोमीटर।
- भोपाल-ब्यावरा सेक्शन के लालघाटी से मुबारकपुर, भोपाल-सिंगारचोली आरओबी सहित फोर लेन का चौड़ीकरण, राष्ट्रीय राजमार्ग 46, लंबाई आठ किलोमीटर। लागत- 222 करोड़ रुपये।

कोरोना के बीच संसद का मानसून सत्र 14 सितंबर से शुरू हो सकता है

नई दिल्ली। कोरोना संकट के बीच 14 सितंबर से

संसद का मानसून सत्र शुरू हो सकता है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, इसके लिए कैबिनेट कमेटी ने लोकसभा अध्यक्ष को प्रस्ताव भेज दिया है। सत्र एक अक्टूबर तक चलाने की तैयारी है। ऑल पार्टी मीटिंग के बाद इसका ऐलान किया जा सकता है। कोरोना के मद्देनजर सोशल डिस्टेंसिंग के लिए लोकसभा और राज्यसभा में सदस्यों के बैठने के लिए दोनों सदनों के चैंबर और गैलरीज के इस्तेमाल जैसे कई प्रयोग पहली बार किए जा रहे हैं। इसके अलावा पहली बार लार्ज डिस्प्ले स्क्रीन, कंसोल्स, अल्ट्रावॉयलेट जर्मिसिडल इरेडिएशन सिस्टम, दोनों सदनों के बीच स्पेशल केबल और पॉलीकॉर्बोनेट सेपरेटर का इस्तेमाल किया जा रहा है।

नई शिक्षा नीति लागू करने वाला पहला राज्य बनेगा कर्नाटक : नारायण

नई दिल्ली। कर्नाटक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति करने लागू करने वाला देश का पहला राज्य बनेगा। राज्य के उप मुख्यमंत्री तथा उच्च शिक्षा मंत्री डॉक्टर सी एन अश्वत्थ नारायण ने सोमवार को यह बात कही। नारायण ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएं एवं कार्यान्वयन'' विषय पर आयोजित पांच दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा, राज्य सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने के लिए आवश्यक प्रशासनिक सुधारों और कानूनों में संशोधन को लेकर सभी तैयारियां कर रही है।

महेंद्र सिंह धोनी की राजनीति में हो सकती है इंट्री!

बीजेपी ने दिया ऑफर, दूसरे दल भी स्वागत को तैयार

रांची। भारतीय क्रिकेट टीम के सुपरस्टार और पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की खामोशी अक्सर अटकलों को जन्म देती है. 15 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद धोनी को लेकर अब चर्चाएं तेज हो चली हैं. कयास ये है कि आने वाले समय में धोनी राजनीति की पिच पर खेलते हुए दिख सकते हैं. ऐसे में झारखंड के तमाम राजनीतिक दल अभी से उनके स्वागत में तैयार दिख रहे हैं. सभी पार्टियां धोनी को लेकर उत्सुकता दिखा रही हैं. खासकर धोनी के होम-टाउन रांची में इसको लेकर कयासबाजी ज्यादा हो रही है. महेंद्र सिंह धोनी के संन्यास के बाद उन्हें पॉलिटिक्स ज्वाइन करने का सबसे पहला ऑफर भारतीय जनता पार्टी की तरफ से दिया गया है. झारखंड बीजेपी इकाई की तरफ से यह ऑफर दिया गया है. रांची से बीजेपी सांसद संजय सेठ ने कहा कि धोनी चाहेंगे तो उनसे रांची आने पर बात की जाएगी. उन्होंने कहा कि धोनी की इच्छा पर ही सबकुछ निर्भर है. अगर वह बीजेपी ज्वाइन करना चाहते हैं तो पार्टी उनसे जरूर बात करेगी.वहीं, कांग्रेस ने भी धोनी के राजनीति में आने की चर्चाओं का स्वागत किया है. झारखंड कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि राजनीति में आने पर महेंद्र सिंह धोनी का स्वागत किया जाएगा. उन्होंने कहा कि धोनी युवाओं के रोल मॉडल रहे हैं. लिहाजा उनको युवाओं को ही ध्यान में रखकर राजनीति करनी चाहिए.

अवमानना मामले में दोषी ठहराए, प्रशांत भूषण सजा पर सुप्रीम कोर्ट ने फैसला रखा सुरक्षित

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अवमानना मामले में दोषी ठहराए गए वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण की सजा पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। न्यायमूर्ति के अवमानना वाले ट्वीट के लिए भूषण के माफी न मांगने पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि माफी मांगने में क्या गलत है, क्या यह शब्द इतना बुरा है। वहीं, सुनवाई के दौरान अटॉर्नी जनरल के के वेणुगोपाल ने सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि प्रशांत भूषण को अवमानना मामले में चेतावनी देकर छोड़ दिया जाना चाहिए। इस पर पीठ ने कहा कि व्यक्ति को अपनी गलती का एहसास होना चाहिए। हमने प्रशांत भूषण को समय दिया, लेकिन उनका कहना है कि वह माफी नहीं मांगेंगे। शीर्ष अदालत ने अटॉर्नी जनरल से पूछा कि प्रशांत भूषण का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट का पतन हुआ है, क्या यह आपत्तिजनक नहीं है। न्यायपालिका के खिलाफ अपने अपमानजनक ट्वीट को लेकर खेद नहीं प्रकट करने के रुख पर दोबारा विचार करने के लिए कोर्ट ने प्रशांत भूषण को 30 मिनट का समय दिया गया था।

कांग्रेस नेतृत्व विवादः

राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा बोले,हम बदलाव के वाहक,डरपोक नहीं

नई दिल्ली। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में फिर से सोनिया गांधी को अंतरिम अध्यक्ष बना दिया गया है. इसके समर्थन में कई नेता हैं तो इसके विरोध में भी कई नेता हैं. सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखने वाले नेताओं में से एक विवेक तन्खा ने पार्टी के दूसरे धड़े पर सवाल उठाए हैं. कुछ लोग गांधी परिवार की चाटुकारिता में लगे हैं तो कुछ नेता अब भी बदलाव की मांग कर रहे हैं. इनमें विवेक तन्खा भी शामिल हैं. राज्यसभा सदस्य विवेक तन्खा ने कहा कि हम बागी नहीं, बदलाव के वाहक हैं क्योंकि इतिहास बहादुर को याद रखता है, डरपोक को नहीं. राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने कहा कि हमें बागी कहना गलत है क्योंकि हम बदलाव की मांग कर रहे हैं ताकि कांग्रेस को नया अध्यक्ष मिल सके और कांग्रेस मजबूत हो सके. उन्होंने कहा कि इतिहास हमेशा बहादुर को याद करता है डरपोक को नहीं. तन्खा का तंज उन नेताओं पर है जो आज भी गांधी परिवार की चाटुकारिता कर रहे हैं.

अटल प्रोग्रेस-वे से होगा समूचे क्षेत्र का विकास, तोमर को सांसदों के 350 करोड़ रूपये के सीआरएफकार्यों के समन्वय की जिम्मेदारी

केंद्रीय मंत्री तोमर के प्रयासों से 3 मार्गों का शिलान्यासः 55.47 करोड़ रूपये के होंगे कार्य

मुरैना। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री व क्षेत्रीय सांसद श्री नरेंद्र सिंह तोमर के प्रयासों से मुरैना संसदीय क्षेत्र के तीन मार्गों के निर्माण कार्यों का शिलान्यास मंगलवार को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गड़करी ने श्री तोमर, श्री थावरचंद गेहलोत व अन्य मंत्रियों के साथ किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अध्यक्षता की। श्री तोमर के प्रयासों से मुरैना के 3 मार्गों का शिलान्यास भी इस अवसर पर हुआ। ये कार्य 55.47 करोड़ रूपए की लागत से होंगे। मध्यप्रदेश को कुल 11,427 करोड़ रूपये लागत की 1,361 किलोमीटर लम्बी 45 सड़क परियोजनाओं की सौगातें मिली है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री नितिन गडकरी ने इन परियोजनाओं के शुभारंभ अवसर पर मध्यप्रदेश को आगे भी सुविधाएं जारी रखने का ऐलान किया। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि श्री गड़करी नई कल्पनाओं को साकार रूप देने के लिए पूरे देश में जाने जाते है। वे जब महाराष्ट्र सरकार में मंत्री थे, तब

मुंबई-पूना हाईवे बनाया था, जो कि अपने आप में देश में एक उदाहरण था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी जब देश के प्रधानमंत्री थे तो उन्होंने गड़करी जी को ही ग्रामीण क्षेत्र में आवागमन की अधोसंचना विकसित करने का जिम्मा सौंपा था। हमें गर्व है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का खाका नितिन गड़करी जी ने ही खींचा था, जिसके माध्यम से आज देश का गांव-गांव सड़कों से जुड़ गया है। श्री तोमर ने कहा कि मुरैना क्षेत्र के जिन तीन मार्गों का आज भूमिपूजन किया गया हैं, उनसे इस क्षेत्र के नागरिकों को आवागमन के लिए बेहतर सुविधाएं मिल पाएंगी। जनता की मांग आज पूरी हो रही है। श्री तोमर ने कहा कि गड़करी जी की सक्रियता, विजन व क्रियान्वयन कराने की ताकत से प्रतिदिन 32 किमी हाईवे का निर्माण भारत में हो रहा है जबकि वर्ष 2016 से पहले प्रतिदिन मात्र 3 किलोमीटर हाईवे बनता था। मोटर व्हीकल एक्ट में संशोधन के लिए श्री गडकरी ने ही पूरे देश को तैयार किया। श्री तोमर ने कहा मध्यप्रदेश के लिए नितिन जी के द्वार सदैव खुले रहते है। हमारे यहां के हर प्रस्ताव पर वे उदारता से मंजूरी देते हैं। चंबल एक्सप्रेस वे की योजना को भी उन्होंने मंजूरी दी है। इससे चंबल क्षेत्र में परिवहन के साथ ही विकास की तस्वीर बदलेगी।

ग्वालियर से प्रकाशित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका,ऑनलाइन न्यूज़ चैनल,पोर्टल,एंड्रॉयड ऐप

को

सम्पूर्ण भारत में नियुक्त करना है

ब्यूरो चीफ / रिपोर्ट्स

मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोआ, कर्नाटक, केरल

आदि राज्यो के जिला एवं तहसील स्तर पर मनोनीत करना है।

संपर्क करें

कार्यालय : ए ब्लॉक,404 भाऊ साहब फोतनीस एंक्लेव,गोले का मंदिर ग्वालियर मध्यप्रदेश मो. 8269307478,7999246560

Website - www.pushpanjalitoday.com,
Email - pushpanjalitoday@gmail.com

ग्रामीण इलाकों में सड़क संपर्क खराब: अजाज जन.जम्मू

जम्मू कश्मीर के कई जिलों के यूथ नेशनल कांफ्रेंस पदाधिकारियों की एक बैठक प्रांतीय अध्यक्ष अजाज जन.एवंम पूर्व विधायक के दवारा शेरे कश्मीर भवन जम्मू में आयोजित की गई। बैठक में वाईएनसी कार्यकर्ताओं ने आम जनता से जुड़े कई ज्वलंत मुद्दों को उठाया, जिसमें विशेष रूप से सड़क की हालत, पानी और बिजली के संकट के साथ-साथ खराब पड़ी सिंचाई नहरें शामिल थीं। कार्यकर्ताओं ने कहा कि जम्मू के ग्रामीण इलाकों में तापमान में वृद्धि के साथ अनियोजित वक्रता के साथ बिजली संकट गहरा रहा है जो लोगों के जीवन को गंभीर संकट में डाल रहा है। अजाज जन. ने जम्मू-कश्मीर सरकार से क्षेत्र में विकास कार्यों और परियोजनाओं के सटीक विवरण प्राप्त करने के लिए एक समीक्षा आयोग बनाने की अपील की और कहा कि कागजों में दिखाए जा रहे विवरणों के साथ कई काम हवा में लटक रहे हैं, जो जमीनी स्तर के लिए सटीक नहीं हैं। उन्होंने कहा कि विशेषकर ग्रामीण इलाकों में सड़क संपर्क खराब स्थिति में है और संबंधित विभाग आम जनता की अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल हैं। उदाहरणों का हवाला देते हुए, अजाज ने कहा कि राजौरी के मोगला से खवास तक एक सड़क पर काम शुरू किया और लगभग एक दशक के बाद भी नाला पुल के साथ केवल एक किलोमीटर सड़क को ब्लैक किया गया है और हजारों लोगों को अपना जोखिम उठाना पड़ता है और बाढ़ वाली नदी को पार करने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ता है उन्होंने कहा कि राजौरी में कंडी से खवास रोड के लिए एक परियोजना को सीएसआर के तहत मंजूरी दी गई थी, जिसके बाद लंबे दावे किए गए थे कि खवास रोड को मॉडल रोड की तरह अपग्रेड किया जाएगा, लेकिन सड़क की वर्तमान स्थिति सभी के सामने है और सड़कों की खस्ता हालत है ÷गंभीर मुगलन राजौरी में पटरारा सड़क, पुंछ में मेंढ़र से मनकोट सड़क, राजौरी से सुरनकोट सड़क मार्ग, राजौरी और पुंछ को जोड़ने वाली सड़क, राजौरी में खांडली से खण्डराी और चकवा रोड के लिए बटोरा और रामबरन जिले के चिल रोड और असार से त्रिगाम सड़क ओर डोडा जिले की हुलार हुंजाला सड़कों पर कुछ उदाहरण हैं कि सड़क संपर्क की घास की स्थिति संबंधित विभागों द्वारा उच्च अधिकारियों के समक्ष कागजों में नहीं बताई गई है। उन्होंने कहा कि जम्मू प्रांत के अन्य जिलों में भी सड़कों की हालत ऐसी ही है और कहा गया है कि शहरी इलाकों में भी सड़कें सबसे खराब स्थिति में है और लोगों की जिंदगी को गंभीर संकट में डाल रही हैं। उन्होंने आगे कहा कि सड़कों के अलावा, जम्मू प्रांत के जिलों में कई अन्य विकास परियोजनाएं वर्षों से लटकी हुई हैं। उन्होंने लोगों की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए जम्मू-कश्मीर सरकार से भी अपील की और कहा कि सरकार को उन लोगों की दुर्दशा पर भी ध्यान देना चाहिए, जो अपने रोजगार पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस मौके पर तजिंदर सिंह, रईज मलिक, मोहम्मद फारूक मीर गाजी, नितीश गोस्वामी, वरिंदर पाल सिंह, अमनदीप सिंह, अवतार सिंह, मतीउल रहमान मीर, राम शर्मा, विपुल गुप्ता और अन्य शामिल थे।

निर्माण कर्मियों के लिए लेबर कार्ड से मिलेगी वित्तीय सहायता--- सरपंच

सुंदरबनी। जिला राजौरी के उपजिला सुंदरबनी पंचायत देवक के सरपंच बोधराज शर्मा ने पंचायत घर में सभी निर्माण कर्मियों को लेबर कार्ड की वित्तीय सहायता के बारे में जागरूक किया और बहुत सारी कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया निर्माण कर्मियों के साथ बातचीत के दौरान सरपंच बोध राज शर्मा ने कहा कि शिक्षा हेतु वित्तीय सहायता नर्सरी क्लास से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को लेबर विभाग की तरफ से दी जाती है और इसके साथ चोट हेतु वित्तीय सहायता अस्थाई विकलांगता हेतु वित्तीय सहायता, पुरानी बीमारियों के उपचार के लिए वित्तीय सहायता और पंजी कर्मियों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में आश्रितों को वित्तीय सहायता अतिरिक्त लाभ प्राप्त होते हैं और इसके साथ साथ पैरामेडिकल डिप्लोमा कोर्स, आईटीआई डिप्लोमा कोर्स, आदि से भी लाभ प्राप्त होते हैं उन्होंने बताया कि लेबर कार्ड बनाने के लिए 18 वर्ष पूरे और 60 वर्ष से कम होना अनिवार्य है साथ ही किसी निर्माण कार्य में कम से कम 90 दिनों के लिए कार्यरत होना जरूरी है सरपंच बोध राज शर्मा ने 100 से 150 लेबर कार्ड की फाइलें तैयार करवाई और कहा लेबर कार्ड बनने के बाद बेनिफिट फाइल तैयार होगी और लेबर विभाग राजोरी की तरफ से वित्तीय सहायता मिलेगी देवक पंचायत के स्थानीय लोगों ने सरपंच बोधराज शर्मा का शुक्रिया अदा किया की बे जमीनी स्तर पर स्थानीय लोगों के लिए नई नई योजनाएं पहुंचा रहे हैं

गौशाला नहीं होने से आवारा पशु जगह जगह भटक रहे है गड्डे में गिरी गाय समाजसेवियों ने निकाला

केशव पंडित जी अम्बाह...

पोरसा...आए दिनों गौ माता एवं गोवंश की बेकदरी हो रही है प्रशासन इस ओर ध्यान नही दे रहा है यदि ग्राम पंचायतों में गोशाला खुलवा दी जाएं तो इस समस्या का समाधान हो सकता है आज ग्राम खेरिया गाँव मे 20 फिट गहरे गड्डे में गाय गिर पड़ी जिसे समाज सेवी व युवा मोर्चा के द्वारा निकाला गया। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा व बजरंग दल पोरसा तथा समाज सेवी युवाओ को जानकारी मिलते ही खेरिया गाँव पहुचे ओर सभी युवाओं के सहयोग से गाय को बाहर निकाला गया और गाय गंभीर रूप से जख्मी हो गयी थी इसलिए तुरंत डॉक्टर को बुला कर उसका इलाज कराया गया।जिसमें भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा अध्यक्ष आशीष सिंह तोमर, बजरंज दल संयोजक विष्णु सिंह तोमर, रवि भदौरिया, गोलू जैन, प्रमोद तोमर, शिवम तोमर,मंगल तोमर,अंकित तोमर,अमित तोमर,रामपाल तोमर, अमर सिंह तोमर, अवदेश सिंह,सोनू तोमर, आदि लोग उपस्थित रहे भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष राम कुमार गुप्ता एवं क्षेत्रीय पूर्व विधायक कमलेश जाटव के द्वारा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से बड़ी गौशाला बनवाने के लिए मांग की है गौशाला निर्माण के होने से शहर व ग्रामीण क्षेत्र की किसान भाइयों व शहरी क्षेत्र में आवारा पशुओं की हो रही घटनाओं पर अंकुश लगेगा और गायों की भी देखभाल अच्छी तरह से हो सकेगी

कोविड-19 पर जन जागरूकता हेतु जन समुदाय की आमुखीकरण कार्यशाला आयोजित की गई

पाली. नरेश कुमार सिरवी. स्वस्थ भारत मिशन-ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग राजस्थान द्वारा जनहित में जारी अभियान के तहत कोविड-19 पर जन जागरूकता हेतु जन समुदाय की आमुखीकरण. कार्यशाला आयोजित की गई. पाली पंचायत समिति ग्राम पंचायत वडेर वास की ग्राम पंचायत मुख्यालय पर जन जागरूकता जन समुदाय की बैठक आयोजित की गई. कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप को देखकर राजस्थान सरकार द्वारा दिशा निर्देश के अनुसार सभी ग्राम पंचायत स्तर पर स्वस्थ भारत मिशन एवं कोविड-19 को रोकने के लिए महत्वपूर्ण जन अभियान चलाया जा रहा . पाली पंचायत समिति के ग्राम पंचायत खेरवा एवं वडेर वास मेंआमुखीकरण कार्यशाला आयोजित की गई.ग्राम पंचायत सरपंच लीला देवी सीरवी सरपंच प्रतिनिधि अमराराम सिरवी द्वारा बताया गया कि जिले में बढ़ते कोविड-19 के प्रकोप को देखकर जन जागरूकता अभियान के तहत सोशल डिस्टेंस एवं अन्य प्राथमिक बचाव संबंधित उपचार की जानकारी नियमित रूप से ग्राम पंचायत द्वारा हर आमजन को दी जा रही . जन समुदाय कीआमुखीकरण कार्यशाला में ग्राम पंचायत रोजगार सहायक सचिव विक्रम सिंह एवं मिट्ठू सिंह द्वारा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर समस्त ग्रामीणों को विश्वव्यापी महामारी को रोकने के लिए महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए जिसमें रोजगार सहायक द्वारा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर कार्यशाला में आने वाले सभी आम नागरिक एवं महिलाओं को सोशल डिस्टेंस एवं सार्वजनिक क्षेत्रों पर भीड़भाड़ वाले इलाकों में नहीं जाने को लेकर महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए. अन्य प्राथमिक बचाव संबंधित जानकारी दी गई.इस मौके पर ग्राम पंचायत सरपंच प्रतिनिधि अमराराम सीरवी ग्राम विकास अधिकारी अरविंद ओझा रोजगार सहायक सचिव पुखराज सीरवी ग्राम पंचायत सहायक सचिव रोजगार विक्रम सिंह मिट्ठू सिंह भाजपा हेमाबास मंडल महामंत्री नरेश मालवीय प्यारी देवी सिरवी उपसरपंच गणेशराम सिरवी आदि सहित ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीणों की उपस्थिति में आज कोविड-19 पर जन जागरूकता हेतु जन समुदाय कीआमुखीकरण कार्यशाला आयोजित की गई

जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर अंतरराष्ट्रीय हिंदू महासंघ (भारत) ने की चिंतन बैठक

राहुल कुमार, आगरा पुष्पांजली टूडे न्यूज़

जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर अंतरराष्ट्रीय हिंदू महासंघ (भारत) ने की चिंतन बैठक। अगरा अंतर्राष्ट्रीय हिंदू महासंघ (भारत) अगरा महानगर की बैठक दिनांक 24 8 2020 को महानगर अध्यक्ष अर्जुन गिर्ज जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में विभिन्न विभिन्न मुद्दों पर विचार किया गया। जिसमें सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि लॉकडाउन खत्म होते ही अंतर्राष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत बड़े स्तर पर आंदोलन करके सरकार से मांग करेगा देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून पूर्ण रूप से लागू हो देश में बढ़ रही मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या को देखते हुए इस कानून की अति आवश्यकता है ।वैसे पर पदाधिकारियों ने चिंता जताई जनसंख्या नियंत्रण कानून को भविष्य में ध्यान में रखते हुए देश हित में जरूरी बताया गया। बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित पदाधिकारी गण , पंडित भूपेंद्र राजौरिया महानगर उपाध्यक्ष, विनय पुत्रा मंडल मंत्री, विजेंद्र बरहान वरिष्ठ महानगर मंत्री,सुमित चावला महानगर मंत्री, शशिकांत महाठा दक्षिणी विधानसभा अध्यक्ष, अनिल पचौरी महानगर मंत्री, करन सिंह महानगर प्रवक्ता, किशन पहलवान दक्षिण उपाध्यक्ष, राजेंद्र प्रजापति, कमल भगत जी ,चुनेंद्र मोहन जी, विकास जी, टिंकू गोस्वामी ,आदि पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विजयपुर की गुरवाल पंचयत में लेबर कमीशन के अदिकारियों द्वारा कैंप लगया

सांबा। जिला सांबा में आज विजयपुर की गुरवाल पंचयत में लेबर कमीशन के अदिकारियों द्वारा एक कैंप लगया गया जिस में पांच गांव के लोगो के रोजगार कार्ड और पुराने कार्डो को रिनु किया गया. ये कैंप पंचायत के सरपंच मोहन लाल शर्मा की देख रेख में लगया गया इस अवसर पर असिस्टेंट लेबर कमीशन साम्बा अमीद खत्रिब मजूद रहे इस दौरान सरपंच ने कहा की पंचयत के लोगो के रोजगार कार्ड बनाए जाने पर विभाग का शुक्रियाअदा किया इस अवसर पर असिस्टेंट लेबर कमीशन साम्बा अदिकारी अमीद खत्रिब का कहना था की उच अदिकारियों के निर्देश अनुसार ये कैंप लगया गया है ताकि मजदुर लोगो के ज्यादा से ज्यादा रोजगार कार्ड बनाए जा सके उन्होने कहा की कार्ड बनाए जाने से मजदुरों और उनके बच्चो को सरकार द्वारा दी जा रही योजनाओ का लाभ मिल सकेगा।

शिवपुरी जिले के दिनारा थाने की पुलिस ने 2 हजार का इनामी बदमाश दबोचा

दिनारा थाना प्रभारी रिपुदमन सिंह राजावत एवं उनकी टीम की सराहनीय कार्रवाई

करैरा तहसील के दिनारा थाना ने 2000 का इनामी बदमाश आरोपी दबोचा थाना प्रभारी रिपुदमन सिंह राजावत ने बताया कि एक शातिर बदमाश विक्की उर्फ विकास ठाकुर पुत्र बलवान ठाकुर उम्र 26 वर्ष निवासी बमेर थाना रक्सा जिला झांसी उत्तर प्रदेश दिनारा के लूट के प्रयास के मामले में ढाई माह से फरार चल रहा था जिस पर 2000 का इनाम घोषित किया था उक्त आरोपी को दिनारा पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया जिस में दिनारा थाना प्रभारी रिपुदमन सिंह राजावत एवं थनरा चौकी प्रभारी विनोद गौतम, आरक्षक जितेंद्र सिंह रावत, अंकित सिंह, अरविंद, पुष्पेंद्र, दीपेंद्र सिंह गुर्जर, दीपक शर्मा एवं सैनिक धर्मपाल की अहम भूमिका रही

राष्ट्रीय बजरंगदल ने सैंया में मनाया अखंड भारत दिवस

रिपोर्टर खेरागढ़ राजकुमार राजपूत

सैंया में राष्ट्रीय बजरंग दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय मनोज कुमार जी भाई साहब ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम को संबोधित किया सैकड़ों की संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता पहुंचे वही बताया गया के हमें अखंड भारत चाहिए हमें लाहौर पिंडी पर भगवा ध्वज लहराना है हमें चाहिए जनसंख्या नियंत्रण कानून हमें चाइये कश्मीरी पंडितों की घर वापसी हमें चाहिए गौ हत्यारों को फांसी हो ऐसा कानून बने हमें चाहिए गौमाता राष्ट्रमाता घोषित हमें चाहिए अखंड भारत उसके साथ ही जिला अध्यक्ष जीतेश ठाकुर के द्वारा मोनू ठाकुर अयेला को जिला गोरक्षा महामंत्री का दायित्व दिया और सैंया ब्लॉक में राष्ट्रीय बजरंगदल की टीम खड़ी करने का आव्हान किया कई लोगों को सदस्यता ग्रहण कराई इसमें मौजूद जिला अध्यक्ष जितेश ठाकुर जिला गोरक्षा प्रमुख रवि परिहार जिला महामंत्री हनुमान ठाकुर जिला उपाध्यक्ष संदीप सिकरवार जिला उपाध्यक्ष आकाश धाकरे जिला मीडिया प्रभारी सुनील परमार जिला उपाध्यक्ष शिवम परिहार जिला मंत्री संजू बाबा जिला सुरक्षा प्रमुख रामू परमार लखन वीर परमार सलाहकार रूपे परमार सह सलाहकार हरि सिंह परमार जिला स्वास्थ्य सलाहकार डॉक्टर भावेश परमार तहसील अध्यक्ष पंकज तोमर पूर्व तहसील महामंत्री कार्तिक सिकरवार नगर अध्यक्ष खेरागढ़ धीरज राठौर सतेंद्र सोलंकी जगनेर करतार सिंह परमार सूबेदार सिंह खेम सिंह परमार सैंया से होमेश गुर्जर योगेश गुर्जर अवधेश ठाकुर अखिलेश ठाकुर राहुल ठाकुर बंटी ठाकुर श्याम सिंह अमित गुर्जर टीटू गुर्जर रोहित त्यागी योगेश राजपूत अनूप बाल्मीकि अजीत सिकरवार ह्रदु ठाकुर बसई विपिन सिकरवार अयेला आज पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे

गौमाता की पुजा करके बुजुर्गो व बच्चो के लिए कपडे दान किये

कर्नाटक– जिला हासन तहसील चंनरायपटणा गणेश चतुर्थी के दिन मातृ भूमि वृद्धाश्रम मे बुजुर्गो व बच्चो को दिऐ कपडे प्रकाश जी जाट कहा की बी.ई.ओ ऑफिसर सुपरिटेंडेंट रविशंकर जी वृद्धाश्रम मे जरूरत मदो69लोगो कपडे दान किया 30 पुरूष के लिए नाईट व बनियान 34 महिला के लिए नाईटी (मैक्सी) चुडीया कुम कुम बच्चो के भी कपडे दिया वृद्धाश्रम मे बुजुर्गो व बच्चो के चेहरे पर मुस्कान देख कर आनन्द का भाव रहा अरसिकेरे गौ शाला मे गौ माता की पुजा करके पशुहार खिलाया प्रकाश जी जाट का परिवार व रविशंकर जी के बहीन भाग्य लक्ष्मी जी व बहानेई गुरू प्रसन्ना जी मौजूद रहे प्रकाश जी जाट ने कहा की यह सेवा भावी परिवार गरीबो व गौ माता लिए तन मन धन का पुरा सहयोग देते है

हारेगा कोरोना जीतेगा जिम्मेदार-सतीश गुप्ता

कोरोना के चलते आओ मिलकर कुछ करें टीम ने किए मास्क वितरण

लहार(अर्पित गुप्ता)

आओ मिलकर कुछ करे टीम ने पूरे नगर में घर-घर जाकर मास्क के वितरण कर महामारी से नगर को बचाने एवं लोगों को जागरण करने के लिए अभियान चलाया । जिसमे सतीश गुप्ता ने बताया है कि पूरे नगर में निशुल्क 5000 मास्क वितरण किये जाएंगे और इसके साथ सभी नगर वासियों को मास्क पहनकर बहार निकलने का संदेश दिया है।उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के चलते जनता शासन के नियमो का पालन करे व मास्क और सेनेटाइजर का समय समय और उपयोग करें।जिसमें प्रमुख रुप से दीपक शर्मा पतंजलि, चंद्रशेखर राजपूत शिक्षक आकाशदीप शुक्ला ,अरविंद आर्य, संजीव चौधरी पत्रकार, संतोष शर्मा शिक्षक ,आंदोलन झा, शिवम राजावत ,विनय भदौरिया, अंकित राजावत आदि टीम के सदस्य प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी ने समाजसेवी और पत्रकारिता अध्यापक जयंत तोमरको बनाया उम्मीदवार ...

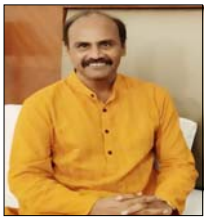

अम्बाह। दिमनी विधानसभा उपचुनाव में लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय संरक्षक रघु ठाकुर ने पत्रकारिता अध्यापक सामाजिक कार्यकर्ता जयंत तोमर को दिमनी विधानसभा उपचुनाव वेद लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी का उम्मीदवार घोषित किया है रघु ठाकुर द्वारा जारी पत्र में लिखा गया है कि लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के संसदीय बोर्ड ने मध्य प्रदेश में हो रहे उपचुनाव में दिमनी विधानसभा क्षेत्र से लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी का प्रत्याशी जयंत तोमर को मनोनीत किया है पत्र में यह भी लिखा गया है कि श्री तोमर उपचुनाव को लेकर अपनी तैयारियां प्रारंभ कर दें ज्ञात रहे कि श्री तोमर अंचल में गरीबों एवं शिक्षकों के समर्थक में अनेक आंदोलन कर चुके हैं जयंत तोमर स्थानीय धनसुला गांव के निवासी हैं उन्होंने अनेक बार जनता की मांगों को लेकर एवं पीड़ितों की समस्याओं को लेकर मुरैना से दिल्ली तक आंदोलन किए हैं खास तौर पर आदिवासियों के हकों लिए किये गये आंदोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है श्री तोमर के प्रत्याशी बनाए जाने पर स्थानीय लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है

मध्यप्रदेश की पर्यटन और हस्तशिल्प की पहचान को स्थापित करेंगी नई सड़कें

केन्द्रीय मंत्री गडकरी ने किए मध्यप्रदेश की 11 हजार 427 करोड़ की सड़कों के लोकार्पण और शिलान्यास

भोपाल। केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम-उद्यम मंत्री श्री नितिन गडकरी ने मध्यप्रदेश की अनेक सड़कों के लोकार्पण के साथ ही नए कार्यों के लिए आधारशिला रखी। वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से कुल 11 हजार 427 करोड़ की लागत से 1361 किमी लम्बाई की 45 सड़क परियोजनाओं के शिलान्यास और लोकार्पण संपन्न हुए। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रालय स्थित कक्ष से इसमें हिस्सा लिया, जबकि वर्चुअल कार्यक्रम में केंद्र सरकार और प्रदेश के कई मंत्री, सांसद, विधायक भी अलग-अलग स्थानों से इसमें सम्मिलित हुए। केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने नई सड़कों के निर्मित होने और अनेक सड़कों का कार्य चालू होने के लिए प्रदेश की जनता को बधाई देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश समृद्ध बनेगा। प्रदेश की सड़क निर्माण की आवश्यकताओं को केन्द्र सरकार द्वारा पूर्ण किया जाएगा। उन्होंने केन्द्रीय सड़क निधि (ष्टक्चस्न) से जनप्रतिनिधियों के प्रस्तावों पर 700 करोड़ रूपए के कार्यों के लिए सहमति प्रदान की। प्रस्तावों को मंजूरी देकर आवश्यक धनराशि भी प्रदान की जाएगी। मध्यप्रदेश में हस्तशिल्प विकास और पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए उनका मंत्रालय अधिकतम सहयोग प्रदान करेगा। अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार मिले और वे प्रदेश के विकास में सहभागी बनें, इसके लिए मध्यप्रदेश के प्रोजेक्ट मंजूर करने में विलंब नहीं होगा। श्री गडकरी ने कहा कि आज जिन मार्गों का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है, उससे आर्थिक विकास की गति को तेज करने में सहयोग मिलेगा। परियोजनाओं से राज्य के मुख्य शहरों से ग्रामीण क्षेत्र तक पहुंच आसान होगी, पर्यटन में वृद्धि होगी, रोजगार निर्माण और किसानों एवं व्यापारियों के साथ ही आम नागरिकों के समय, ऊर्जा और धन की भी बचत हो सकेगी। मध्यप्रदेश की आर्थिक रफ्तार तीव्र होगी। श्री गडकरी ने आज स्वीकृत परियोजनाओं में से ओरछा में ब्रिज के निर्माण, ग्वालियर-देवास मार्ग, डबरा, जबलपुर, रीवा, भोपाल, साँची, सागर, बीना के कार्यों के लंबे समय से पूर्ण होने की जनप्रतिनिधियों की अपेक्षाओं का भी उल्लेख किया। केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने वर्ष 2020-21 के लिए 10 हजार करोड़ लागत के पांच नए मार्गों की स्वीकृति प्रदान की। इनमें राष्ट्रीय मार्ग उज्जैन-झालावाड़ 132 कि.मी., सागरटोला-कबीर चबूतरा 45 कि.मी., बुदनी-रहेटी-नसरुल्लागंज 43 किमी. शामिल है। इन्दौर-सनावद-बारेगांव-136 कि.मी. और बोरगांव-बुरहानपुर-अकोला-174 कि.मी. शामिल हैं। श्री गडकरी ने कहा कि मध्यप्रदेश में सड़क निर्माण कार्यों की कुछ डी.पी.आर. तैयार की जा रही हैं, जिन्हें शीघ्र ही मंजूरी मिलेगी। केन्द्रीय सड़क एवं बुनियादी ढाँचा निधि (ष्टक्चस्न) के 5325 करोड़ के 97 कार्य स्वीकृत किए गए हैं। इसके साथ ही अंतर्राज्यीय जुड़ाव एवं आर्थिक महत्व (ङ्कस्ट × श्वङ्क) के अंतर्गत 30 करोड़ के कार्यों को स्वीकृति दी गई है। मध्यप्रदेश को 2855 करोड़ की राशि ष्टक्चस्न में प्रदान की गई है। श्री गडकरी ने कहा कि मध्यप्रदेश में 13 हजार 248 किमी लंबाई एनएच की सड़कों की है। यह मध्यप्रदेश में निरंतर बढ़ी है।

अधिकारी हर माह निरीक्षण कर निर्माणाधीन दिव्यांग पुनर्वास केन्द्रों की जानकारी दें

मंत्री पटेल ने की प्रदेश में निर्माणाधीन 20 पुनर्वास केन्द्रों की समीक्षा

भोपाल। सामाजिक न्याय और निशक्तजन कल्याण मंत्री श्री प्रेमसिंह पटेल ने प्रदेश के निर्माणाधीन जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्रों का निर्माण गुणवत्ता और निर्धारित समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारी हर माह स्वयं मौके पर जायें और कार्य का निरीक्षण कर प्रगति की जानकारी दें। केन्द्रों का निर्माण पूरा होने पर श्रवण, दृष्टि, अस्थि बाधित आदि सभी दिव्यांगों को जीवनयापन में होने वाली कठिनाई में कमी आयेगी। प्रमुख सचिव सामाजिक न्याय डॉ. प्रतीक हजेला ने बताया कि प्रदेश के 20 जिलों - भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, श्योपुर, अशोकनगर, गुना, जबलपुर, पन्ना, बुरहानपुर, देवास, शाजापुर, बड़वानी, इंदौर, रतलाम, रायसेन, सागर, देवास, टीकमगढ़ और सतना में जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्रों का निर्माण जारी है। लगभग 3 करोड़ की लागत से दो मंजिला बनने वाले पुनर्वास केन्द्रों में सभी तरह के दिव्यांगों के लिये फिजियोथेरेपी रूम और अन्य सुविधाओं का इंतजाम किया जा रहा है दिव्यांगजनों के लिये प्रदेश में रेम्प, शौचालय आदि का भी निर्माण किया जा रहा है।

प्रदेश को मिली बड़ी सौगात, पिछड़े क्षेत्रों और पर्यटन का होगा विकासः विष्णुदत्त शर्मा

भोपाल। केन्द्रीय सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी ने मध्यप्रदेश को जो सौगातें दी हैं, उनके लिए मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं श्री गडकरी को धन्यवाद देता हूं। आज का दिन प्रदेश में अधोसंरचना के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक दिन है और मैं प्रदेश की जनता तथा जनप्रतिनिधियों को बधाई देता हूं। मध्यप्रदेश को सड़कों के नेटवर्क की बड़ी सौगात मिली है, चंबल एक्सप्रेस वे जैसी परियोजना को मंजूरी मिली है, जिनसे न सिर्फ पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पिछड़े क्षेत्रों और उद्योगों का विकास होगा तथा रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। यह बात भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने मीडिया से चर्चा के दौरान कही। इससे पूर्व केंद्रीय भूतल परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने मध्यप्रदेश में 11427 करोड़ रुपये की लागत वाले निर्माण कार्यों का वर्चुअल लोकार्पण और शिलान्यास किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने की। इस वर्चुअल कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, केंद्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत, नरेंद्रसिंह तोमर, फग्गनसिंह कुलस्ते, प्रहलाद पटेल, प्रदेश के लोकनिर्माण मंत्री गोपाल भार्गव, प्रदेश के सांसद, विधायक व जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि प्रदेश में 1361 कि.मी. लंबी सड़कों व अन्य निर्माण कार्यों के लोकार्पण व शिलान्यास से मध्यप्रदेश में सड़कों का नेटवर्क और विस्तृत होगा और मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को बल मिलेगा। श्री शर्मा ने कहा कि केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी ने उन निर्माण कार्यों को भी मंजूरी दे दी है, जिनके लिए मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर, वरिष्ठ नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया एवं प्रदेश के जनप्रतिनिधि लंबे समय से प्रयास कर रहे थे।

केंद्रीय मंत्री गडकरी ने किया 11427 करोड़ के कामों का वर्चुअल लोकार्पण और शिलान्यास

श्री शर्मा ने कहा कि श्री गडकरी ने खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में 2051 करोड़ लागत वाली दो परियोजनाओं का लोकार्पण किया है, तथा तीन नए कामों का शिलान्यास किया है। उन्होंने कटनी में 194 करोड़ रुपये की लागत वाले फोर लेन बाइपास के निर्माण, 6.5 करोड़ लागत वाले पवई-कटनी रोड का शिलान्यास, 6.5 करोड़ की लागत वाले गोलगंज-अमानगंज-पवई मार्ग का शिलान्यास, 1034 करोड़ की लागत से बने मैहर से कटनी-स्लीमनाबाद रोड का शिलान्यास और 810.22 करोड़ की लागत वाले स्लीमनाबाद-जबलपुर रोड का लोकार्पण किया है। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी ने लोकार्पण और शिलान्यास के अलावा कई नए कामों को स्वीकृति भी दी हैं, जिनसे प्रदेश के विकास को रफ्तार मिलेगी। उन्होंने कहा कि श्री गडकरी ने राम वन गमन पथ की सड़कों के लिए जो 1700 करोड़ रूपए की अनुमति दी है, वह प्रदेशवासियों के लिए सौभाग्य का विषय है और उन लोगों के गाल पर तमाचा है जो लगातार इस पर प्रश्न खड़ा करते रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ हमेशा यही कहते रहे कि हमारे पास पैसा ही नहीं है और अपनी जेबें भरने का काम करते रहे।

मुख्यमंत्री चौहान करेंगे मनुआभान टेकरी पर निर्मित जल शोधन संयंत्र का लोकार्पण

अमृत परियोजना में भोपाल शहर को जल प्रदाय के लिये 418.37 करोड़ की स्वीकृति

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान बुधवार 26 अगस्त को प्रात= 11.30 बजे अमृत परियोजनान्तर्गत मनुआभान टेकरी पर निर्मित 50 एमएलडी जल शोधन संयंत्र का लोकार्पण करेंगे। भोपाल शहर में जल प्रदाय के लिये सम्पूर्ण अमृत परियोजनान्तर्गत 418.37 करोड़ रूपये की स्वीकृति दी गई है। मनुआभान टेकरी पर निर्मित जल शोधन संयंत्र के निर्माण की लागत 13 करोड़ 90 लाख रूपये है। इसके साथ जल शोधन संयंत्र से संबंधित अवयवों में कर्बला पर निर्मित इन्टेक वेल एवं पंप हाउस निर्माण की लागत 5.30 करोड़ रूपये, रॉ वाटर राइजिंग मैन बिछाने की लागत 12.10 करोड़ रूपये, 5 उच्च स्तरीय टंकियों के निर्माण की लागत 7 करोड़ रूपये और जल वितरण नलिकाओं एवं फीडर मैने बिछाने की लागत 28.50 करोड़ रूपये है। अमृत परियोजना अंतर्गत नगर निगम भोपाल द्वारा बड़े तालाब के जल पर आधारित 50 एमएलडी क्षमता के जल शोधन संयंत्र का निर्माण मनुआभान टेकरी पर किया गया है। इस जल शोधन संयंत्र से विधानसभा क्षेत्र हुजूर, बैरसिया, नरेला एवं गोविन्दपुरा के कई क्षेत्रों में उच्च स्तरीय टंकियों के माध्यम से जल प्रदाय किया जायेगा जिससे इन क्षेत्र में नागरिकों को शुद्ध जल सुचारू रूप से प्राप्त हो सकेगा।

युवक युवती ने एक साथ फांसी लगाकर की खुदकुशी

प्रेम प्रसंग के चलते जान देने की आशंका

भोपाल। राजधानी के एमपी नगर इलाके में स्थित शिवाजी नगर मे मंगलवार सुबह एक युवती और पड़ोसी युवक द्वारा एक साथ खाली मकान में फांसी लगाकर आत्महत्या किये जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। लड़की का भाई कुंडी तोड़कर अंदर पहुंचा और दोनों को उपचार के लिये निजी अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने शुरुआती चेकअप के बाद ही दोनो को मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से मिली सुचना पर पहुची पुलिस ने बताया कि दोनो ने फांसी कब और क्यों लगाई, इसका फिलाहल खूलासा नही हो पाया है। मर्ग कायम कर पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए मर्चूरी भेजते हुए जांच शुरु कर दी है। हालांकि पुलिस को आंशका है कि आत्महत्या का कारण प्रैम प्रसंग हो सकता है। पुलिस के अनुसार जिस जगह फांसी लगाई गई है, वो फ्लैट पहली मंजिल पर है। इसमें ताला लगा रहता था। इसी के बगल में युवती अपने भाई के साथ रहती थी। भाई के मुताबिक सुबह जब वो सोकर उठा तो उसे बहन नजर आई। जब उसने उसकी खोजबीन की तो बगल वाले फ्लैट का ताला टूटा नजर आया था। आशंका होने पर जब उसने दरवाजा खटखटाया, तो अंदर से कोई आवाज नहीं आई। किसी तरह उसने दरवाजे की कुंडी तोछी ओर भीतर पहुंचा जहाँ दोनों के शरीर फांसी के फंदे पर झूलते नजर आये। जानकारी के अनुसार शिवाजी नगर में मंगलवार सुबह युवक-युवती ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली।

सनगठा सिंचाई परियोजना के लिये 145.45 करोड़ रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति

मुख्यमंत्री चौहान की अध्यक्षता में हुई चतुर्थ वर्चुअल मंत्रिपरिषद की बैठक

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में आज वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से मंत्रि-परिषद की चतुर्थ वर्चुअल बैठक हुई। मंत्रिपरिषद ने सनगठा (ऐर) सिंचाई परियोजना के कुल सैच्य क्षेत्र 4630 हेक्टेयर के लिये 145 करोड़ 45 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति दी हैं। परियोजना से सूक्ष्म सिंचाई पद्वति द्वारा पिछोर तहसील के 15 ग्रामों की 4630 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा प्राप्त होगी। सीमांकन/मानचित्रण की प्रक्रिया का सरल एवं शुद्व करने के लिए राज्य में सीओआरएस (कंन्टीन्यूअसली आपरेंटिग रिफरेंस स्टेशन) प्रणाली का उपयोग शुरू करने के लिए राजस्व विभाग द्वारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग के साथ एमओयू निष्पादित किया गया हैं। वर्तमान में राजस्व विभाग द्वारा भूमि सीमांकन का कार्य ईटीएस (इलेक्ट्रानिक टोटल स्टेशन) मशीन द्वारा किया जा रहा है। मंत्रिपरिषद ने ईटीएस मशीनों से सीमांकन करने में विभाग को अनेक व्यवहारिक कठिनाईयों का सामना करने के दृष्टिगत उपरोक्त की मंजूरी दी है। सीमांकन कार्य को आधुनिक तरीके से कम समय में पूर्ण करने में सीओआरएस प्रणाली अत्यंत प्रभावी साबित होगी। सीओआरएस नेटवर्क का उपयोग करने से उच्चस्तर के एक्यूरेसी के साथ भू-सर्वेक्षण एवं मानचित्रण का काम कर सकेगा। सीओआरएस नेटवर्क के उपयोग से किसी भी मौसम या परिस्थिति में सीमांकन/मानचित्रण गतिविधि की जा सकती है। साथ ही क्षेत्र में खड़ी फसल में भी यह काम कर सकेगा। इस नेटवर्क के उपयोग से आने वाले समय में जीएनएसएस चिप के साथ स्मार्ट फोन/ मोबाईल पर लोड किये गए एप से भी सीमाकंन संभव होगा। मंत्रि-परिषद ने सामान्य प्रशासन विभाग के परिपत्र के अनुसार संविदा पर नियुक्त अधिकारी/कर्मचारियों को नियमित पदों पर नियुक्ति के लिये 20 प्रतिशत पद आरक्षित किये जाने के प्रावधान से पुलिस भर्ती को मुक्त रखने का निर्णय लिया है। मंत्रि-परिषद ने राज्य के तीसरे विधि आयोग के सुचारू रूप से संचालन के लिये अन्य पदों के साथ आयोग के पूर्णकालिक अध्यक्ष, सदस्य सचिव एवं अन्य अंशकालिक सदस्यों के पदों की सेवा शर्तों एवं पारिश्रमिक को अधिक स्पष्ट और युक्तियुक्त बनाये जाने के लिये संशोधन की मंजूरी दी है। मंत्रि-परिषद ने नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के अंतर्गत सिंचाई योजनाओं के त्वरित क्रियान्वयन के लिए नर्मदा बेसिन प्रोजेक्टस कंपनी लिमिटेड के माध्यम से वित्त पोषित करने के संबंध में विभाग द्वारा जारी आदेश का अनुसमर्थन किया मंत्रि-परिषद ने सरदार सरोवर परियोजना से उत्पादित विद्युत से प्राप्त होने वाले पूर्ण राजस्व को नर्मदा बेसिन प्रोजेक्ट कंपनी लिमिटेड को हस्तांरित करने का निर्णय लिया। सरदार सरोवर परियोजना के विद्युत बिल अनुसार पूर्ण राजस्व वित्त विभाग द्वारा उर्जा विभाग /मध्यप्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड को दी जाने वाली सब्सिडी से हर माह घटाकर नर्मदा बेसिन प्रोजेक्ट कंपनी लिमिटेड को देने की मंजूरी दी।

संपादकीए

कांग्रेस में कलह

नए अध्यक्ष के चयन के लिए बुलाई गई कांग्रेस कार्यसमिति की वर्चुअल बैठक नेताओं की कलह का जरिया बन गई। बैठक से पहले सोनिया गांधी को लिखी गई चिट्ठी के मुद्दे पर घमासान मच गया। मनमोहन सिंह, एके एंटनी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी समेत कई नेताओं ने चिट्ठी लिखने वाले 23 नेताओं को खूब खरी-खोटी सुनाई। बात यहां तक आ गई दिग्गज नेता गुलाम नबी आजाद ने कांग्रेस पार्टी छोड़ने तक की बात कह दी तो एक और सीनियर नेता कपिल सिब्बल ने अपने ट्विटर हैंडल से अपनी कांग्रेसी पहचान मिटा दी। दरअसल, यह सब राहुल गांधी के उस बयान की प्रतिक्रिया में हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी की चिट्ठी लिखने वालों पर भाजपा के साथ सांठगांठ का आरोप लगा दिया। बता दें कि कांग्रेस के 23 वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखी जिनमें कांग्रेस कार्यसमिति के कई सदस्यों के अलावा पांच पूर्व मुख्यमंत्री, कई सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री शामिल हैं। सोनिया गांधी को भेजी गई चिट्ठी में राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष गुलाम नबी आजाद के अलावा पूर्व केंद्रीय मंत्रियों-आनंद शर्मा, कपिल सिब्बल, मनीष तिवारी, शशि थरूर, सांसद विवेक तनखा, मुकुल वासनिक और जितिन प्रसाद के नाम हैं। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्रियों भूपिंदर सिंह हुड्डा, राजेंद्र कौर भट्टल, एम वीरप्पा मोइली, पृथ्वीराज चव्हाण, पीजे कुरियन, अजय सिंह, रेणुका चौधरी और मिलिंद देवड़ा के भी हस्ताक्षर हैं। राज बब्बर, अरविंदर सिंह लवली और कौल सिंह ने भी चिट्ठी को समर्थन दिया है। यह पत्र रविवार को सामने आया था। इसके बाद सोनिया गांधी ने पत्र का जवाब देकर कहा कि उनका एक साल का कार्यकाल खत्म हो चुका है। अब पार्टी नया अध्यक्ष चुनने की प्रक्रिया शुरू कर दे। सोमवार की बैठक में जो हुआ, उसके संकेत रविवार को सोनिया गांधी के इस जवाब से मिल गया था, मगर मामला इस कदर बिगड़ेगा, किसी को उम्मीद नहीं थी। कांग्रेसी खेमे में चल रही खटपट अब तक बंद कमरे में थी, आज पूरे देश के सामने है। इस पत्र की खबर सामने आने के साथ ही पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पार्टी के कई अन्य वरिष्ठ एवं युवा नेताओं ने सोनिया और राहुल गांधी के नेतृत्व में भरोसा जताया और इस बात पर जोर दिया कि गांधी परिवार ही पार्टी को एकजुट रख सकता है। मगर नेताओं की रस्साकशी ने कांग्रेस को सोनिया और राहुल दो धड़ों में बांट दिया है।

जब कोरोना का उफान तो बेफिक्र क्यों इंसान!

केन्द्र द्वारा राज्यों को दिए मनमाफिक अधिकारों के बजाए कोरोना पर वन नेशन वन डायरेक्शन का फॉर्मूला अपनाया जाए, सोशल डिस्टेंसिंग, सभी जरूरी जगहों पर मास्क पहनने, देश भर में दुकानों के बन्द और खुलने का एक सा समय, सप्ताहान्त व साप्ताहिक कर्फ्यू जैसी सख्ती के लिए पूरे देश में एक से नियम हों ताकि विविध नियमों का भय और संशय न रहे. कोविड अस्पतालों की बेहतरी के लिए देश में सभी सेन्टरों को सीसीटीवी सर्वेलॉन्स के एक प्लेटफॉर्म पर लाकर तुरंत एक सेण्ट्रल मॉनीटरिंग प्रणाली विकसित की जाए जो नामुमकिन नहीं है. दरअसल कोरोना को लेकर अब लोगों में तरह-तरह की भ्रान्तियां बहुत तेजी से घर करती जा रही हैं.निश्चित रूप से यह बेहद चिन्ताजनक और भयावह है. उससे भी बड़ी हैरानी की बात यह कि भारत में पहली बार एक दिन में 30 जुलाई को कोरोना मरीजों की संख्या 50 हजार पार कर 52 हजार 123 क्या हुई जो अब तक थमने का नाम नहीं ले रही है. इसके बाद तो जैसे हर रोज संख्या बढ़ोत्तरी की होड़ सी लग गई.पिछले एक हफ्ते से तो लगातार 60 से 70 हजार संक्रमितों के मामले सामने आते रहे. लेकिन इसी सप्ताहांत शनिवार देर रात इसका भी रिकॉर्ड टूट गया और एक दिन में कुल मामले 70 हजार को पार कर गए. इसे हल्के से लेना न केवल बेहद घातक होता जा रहा है बल्कि इसके गंभीर, नकारात्मक और दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं. आखिर ऐसा क्या हो रहा है जो लोग कोरोना को लेकर एकदम बेफिक्र से होते जा रहे हैं? वह भी तब, जब विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ लगातार चेता रहा है. स्वास्थ्य मंत्रालय भी बता रहा है. सभी राज्य सतर्कता को लेकर नित नए आदेश निकाल रहे हैं. सब जानते हैं कि कोरोना इस सदी की घातक वैश्विक महामारी तो भारत की राष्ट्रीय आपदा है. 69 दिनों के लॉकडाउन का दौर देश पहले देख चुका है. अब कोई भी लॉकडाउनहीं देखना चाहता क्योंकि इससे लाखों नौकरियां चली गईं, न जाने कितने छोटे-बड़े रोजगार, धंधे बन्द हुए. बावजूद इसके लोगों के दिमाग से कोरोना का डर आखिर क्योंखत्म हो रहा है?यह चिन्ताजनक है! हाल ही में उप्र के दो कैबिनेट मंत्रियोंकी मृत्यु गई. 9 दूसरे मंत्री संक्रमित हुए. देश के पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी संक्रमण के साथ गंभीर हैं. जबकि गृहमंत्री अमित शाह भी कोरोना की चपेट में आए. मप्र में तो मुख्यमंत्री सहित कई मंत्री गिरफ्त में आ चुके हैं और सिलसिला जारी है. दूसरे कई प्रदेशों में भी कमोवेश यही हालात हैं. मंत्री, विधायक, विशिष्ट, अतिविशिष्ट किसी को भी कोरोना ने नहीं बख्शा. केन्द्रीय आयुष मंत्री श्री पद नाइक की हालत कोरोना संक्रमण से बेहद गंभीर हो गई थी. गोवा सरकार ने भी माना हैवो मौत के मुंह से लौटे हैं. फिर भी लोग लापरवाह क्यों हो रहे हैं?

समझना होगा कि आखिर हुआ क्या जो लोगों के मन से कोरोना का डर खत्म हो रहा है? इस सच को समझने से गुमाइन्दों और हुक्मरानों को भी परहेज नहीं करना चाहिए. हो सकता है कि कमीं

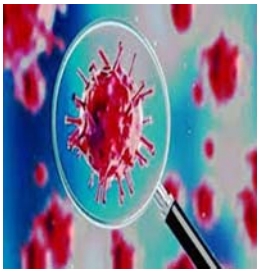

कहें या चूक या फिर अनदेखी जो भी हो उसे सुधार लिया जाए और एक बार फिर संक्रमण की रफ्तार थामी जा सके.दुनिया का भूगोल तो बदला नहीं जा सकता. देश, शहर, गांव की दूरियां वही रहेंगी. हां कुछ घटा है तो इंसानों का आपसी संपर्क जिसे मोबाइल और सोशल मीडिया ने खत्म कर दिया और आपसी विश्लेषणों के दौर तर्क-कुतर्क का मौका दिया. कितनी ही सच्ची-झूठी धारणाएं, अवधारणाएँ भी बनी, बिगड़ी होंगी. लॉकडाउन में कठोरता, अनलॉक में ढील के अपने-अपने मायनों से ही लापरवाहियों केउपजने का सिलसिला चल पड़ा. पहले केन्द्र की इकलौती गाइड लाइनथी. अबराज्यों के अपने निर्देशों हैं.कई राज्यों में डीएम को जरूरत के मुताबिक जिले में आदेश का अधिकार है तो डीएम अपने-अपने अनुविभागों में एसडीएम को जिम्मेदारी दे चुके हैं.नतीजन एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालने से भी भारत में कोरोना महामारी पर राज्यों की अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग जैसी स्थिति बन गई. बस यहीं से लोगों में भ्रान्तियां भी फैलीं और ऐसी भ्रान्ति सोशल मीडिया पर कैसी-कैसी क्रान्ति लातीहैं पूछिए मत. वाट्स एप यूनिवर्सिटी का सच सबको पता है. कोरोना को लेकर भी कुछ यही हुआ. वह अपनी अंधी रफ्तार बढ़ता रहा. इस बीच रही सही कसर तमाम कोविड अस्पतालों की दुर्दशा, साधारण दवाओं से इलाज का भ्रम और इलाज में लापरवाहियों के लीक तमाम वायरल वीडियो जिसमें इंसानी अंगों के निकालने की मनगढ़ंत कहानियों ने पूरी कर दी. शायद इन्हीं सब से डर जाता रहा. वैक्सीन के आभाव में इम्युनिटी पर जोर का वाजिब फण्डा प्रशंसनीय है. सच कहा जाए तो होम आइसोलेशन, क्वारण्टीन, कंटेनमेण्ट एरिया के जहां-तहां नित नए नए बदलते नियमों से भी आम जनमानस में डर कमा और भ्रम बढ़ा. माना कि हालातों के मद्देनजर यह जरूरी था लेकिन उससे जरूरी यह था कि जनसामान्य को मानसिक रूप से संक्रमण के पहले जैसे बल्कि और भी बढ़े खतरे से आगाह कराते हुए राहत कीवजहें बताकर सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क, सैनिटेशन की जरूरत पर सख्ती से अमल काकड़ा संदेश देना था. यही नहीं हुआ. यह भी नहीं भूलना चाहिए कि उसी सोशल मीडिया पर ऐसे वीडियो भी खूब फॉरवर्ड और शेयर हुए जिन्हें कईकोरोना पीड़ितों ने मौत से पहले बनाकर जारी किया था. बावजूद इन सबके कोरोना को लेकर बेफिक्रीहैरान करती है. अब चाहे व्यापारी हों,नागरिक या फिर अधिकारी ही क्यों न हो मास्क न लगाने, सोशल डिस्टेंसिंग की लापरवाही, सार्वजनिक स्थलों पर थूकना या गंदगी फैलाने पर जुर्माना प्रशंसनीय है. लेकिन दुख तब होता है जब एक आम आदमी यह कीमत लाठियों से पिटकर चुकाता है.कठोरता का मतलब पिटाई तो नहीं. समझाइश से हल निकलता है, निकला है. बीते शनिवार की देर रात कोरोना संक्रमण ने एक दिन में 70 हजार पार कर नया रिकॉर्ड रचाजबकि कुल संक्रमितों की संख्या साढ़े 30 लाख के करीब पहुंच गई. यहबेहद गंभीर चेतावनी है. ऐसे में रिकवरी रेट के बढ़ते आंकड़ों से वाहवाहीलूटसंक्रमण केभय को दबाने की कोशिशभी ठीक नहीं.दूसरे देशों के आंकड़ों से रिकवरी कीतुलना कर हम जनसामान्य को अच्छा संदेश जरूर देते हैं. लेकिन यह भूल जाते हैं कि केवलकोरे संदेशों और आंकड़ों की बाजीगरी से लड़ाई जीत नहीं पाएंगे. निदान के रास्ते पर बढ़ना होगा और कोरोना से बचाव, सेहत की सुरक्षा, जनजीवन के लिए जरूरी गतिविधियों को बिना संक्रमण की जद में आए जारी रखने वाले प्रयासों पर ज्यादा ध्यान देना होगा. जाहिर है अब लॉकडाउन की स्थिति दिखती नहीं. हाँ, ऐसी सख्तियों की सख्तजरूरत है ताकि लोग खुद ही हीशियार रहें. केन्द्र द्वारा राज्यों को दिए मनमाफिक अधिकारों के बजाए कोरोना पर वन नेशन वन डायरेक्शन का फॉर्मूला अपनाया जाए.सोशल डिस्टेंसिंग, सभी जरूरी जगहों पर मास्क पहनने, देश भर में दूकानों के बन्द और खुलने का एक सा समय, सप्ताहान्त व साप्ताहिक कर्फ्यू जैसी सख्ती के लिए पूरे देश में एक से नियम हों ताकि विविधनियमों का भय और संशय न रहे. कोविड अस्पतालों की बेहतरी के लिए देश में सभी सेन्टरों को सीसीटीवी सर्वेलॉन्स के एक प्लेटफॉर्म पर लाकरतुरंत एक सेण्ट्रल मॉनीटरिंग प्रणाली विकसित की जाए जो नामुमकिन नहीं है. सभी बड़े अस्पतालों, जिला अस्पतालोंमें सीसीटीवी होते हैं जिन्हें सहज उपलब्ध तकनीक से जोड़नेशनल सर्वेलान्स सिस्टम बनाना होगा ताकि देश के किसी भी अस्पताल की व्यवस्था-अव्यवस्था कोरेण्डमली कभी भी देखा, जाना जा सके. इससे भयवश ही सही व्यवस्था सुधरेगी.

मेरी मां, जगत जननी- सी, मेरी मां...!

रोता था जब कभी
उठाकर पुकारती मेरी मां,
रूठता था हर पल कभी,
कुछ खिलाकर मनाती थी
मेरी मां ...!
मांगता था उस आंचल से
कभी बालों को सहलाती,
पुचकारकर सब देती ;
मेरी माँ ...!

मां का साया बना रहे हर
जन्म,
लुटाती रहे अपना प्रेम;
लगा रहे दामन का साया
हर पल ,
मां ! तुम हो मेरी सांसे
मां !तुम हो मेरी धड़कन
तुम ही हो मेरे सपनों की दुआ!
तुम ही हो मेरे गीतों की माला
मेरी माँ ...!
सोता हूँ अब तेरी गोद में ,
सारा संसार समाया हो जैसे ! खिलखिलाता हूँ मां
तेरे सामने

वही पहले वाला बच्चा बनकर, मेरी मां.....!
सुखों का सागर ....!
मेरी मां !!

लेखक –
गोपाल लेगा खेतासर जोधपुर।

रेत सी फिसलती जिंदगी

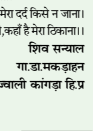

सुबह की रोशनियाँ।
चहचहाती शहनाईयाँ।
आंगन में चुगते परिंदे,हवा की खामोशियाँ।
आहट हुई चुगना भी छोड़ा,
उड़ गए मेरे मन के पंछी।
देखता रहा दूर दूर तक
,मिला न मुझे हैआशियाना।
रेत सी फिसलती जिंदगी मेरी,कहाँ है मेरा ठिकाना।।
निर्जन राह पर निबिड़ निशा,
चलता रहा मैं अकेला।
साथी सब मेरे छूट गए,
बिखर गया मेरा मेला।
कभी मिले थे,साथ चले थे,बन गया इक अफ़साना।
रेत सी फिसलती जिंदगी मेरी,कहाँ है मेरा ठिकाना।।
देखूँ मुकद्द का आँचल उड़ता,
मृगतृष्णा में मृग मन तड़पा।
होते सागर फिर भी प्यासा,
कौन जाने मेरे मन की आसा।
जान कर अनजान बनें सब,मेरा दर्द किसे न जाना।
रेत सी फिसलती जिंदगी मेरी,कहाँ है मेरा ठिकाना।।

शिव सन्याल
गा.डा.मकड़ाहन
ज्वाली कांगड़ा हि.प्र

आखिर तू है क्या जिंदगी ?

यह कैसी विडम्बना है कि हम खुशी का बुलबुला
देख उसकी तरफ उछल पड़ते है, उसे छूने के लिए
करीब जाओ तो वो ओझल
यह कैसी कसौटी है
पल -पल करवट लेती है घटनाएं
ये कैसा छलावा है
जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है उसकी
अपेक्षा तक नहीं कि जा सकती
ऐसी क्यों भ्रांति होती है कि सब शाश्वत है और
अगले ही पल एहसास होता है कि सब नश्वर है
यह श्रृष्टि, सुख, दु:ख, प्यार, इश्क़, मोहब्बत,
दोस्ती,रिश्तेदारी, खुशी,गम, दौलत, शोहरत,
रुतबा,सफ़र, ना तय किया हुआ सफ़र, स्मशान,
कब्र, मौत,जिंदगी
और ये जीवन भी
हम सोचते है कि सब सही चल रहा है अपनी
मर्जी से और अगले ही वक्त सबकुछ अलग
सबकुछ अजनबी।
एक पल ऐसा लगता है कि आसमान की ऊंचाई
पर पहोंच गए है
और दूसरे ही पल,
धड़ाम से जमीन में जा टपके ऐसा होता है।
हमारे बस में है ही क्या?
ना हम वक़्त को थाम सकते है, ना ही उसे पल
भर के लिये रोक सकते है,
कभी-कभी लगता है वक़्त को हमने पीछे छोड़
दिया
कभी कभी लगता है वक्त हमको पीछे छोड़ गया।
अपनी मर्जी से हम सांस रोक तो लेते है
मगर बस थोड़ी सी देर के लिए
उसके बाद ये फिर से ऊपर नीचे आती जाती
रहती है।
हमारे ही दिल की धड़कनों पे हमारा काबू नहीं है।
कभी कभी लगता है की ये जो कुछ जितना कुछ
इर्द गिर्द भीतर है सब ही सच है इससे ज्यादा कुछ
है ही नहीं
यही अचल है, जो अविरत अटल निरंतर बहा जा
रहा है
युगों से किसी अनजान सी मंजिल की और
बे सबब,बे मतलब
कभी कभी लगता है
ये जो इर्द गिर्द भीतरजो कुछ बह रहा है युगों से
किसी अनजान सी मंजिल की तरफ
वो झूठ है, भरम है,
जो दिख रहा है, वो है ही नहीं, और जिसे हम देख
नहीं पाते
वो ही असल जीवन है वो ही सत्य है
वो ही मर्म है।
जिंदगी से ज्यादा असार वस्तु दुनिया में कुछ है ही
नहीं और इस असार जीवन की नश्वरता पर हम
आशा, अभिलाषा, अरमान, सपने, और ख्वाहिशों
के कितने बड़े पुतले बनाते है तोड़ते है,
यह कैसी विडम्बना है ?
यह कैसी कसौटी है?
यह कैसा छलावा है, ?
आखिर तू है क्या जिंदगी?

लेखक परिचय
नाम: कैलाशसिंह राठौड़

बाल कविता - गणपति विसर्जन

प्यारे दादू , प्यारे दादू , जरा मुझको ये समझाओ।
क्यों करते है , गणपति पूजा मुझको ये बतलाओ।
क्यों विसर्जन करते गणपति,मुझको ये बतलाओ।
ये क्या रहस्य है दादू , जरा मुझको ये समझाओ।

पास मेरे तुम आओ बाबू , तुमको मैं समझाता हूँ।
क्या होता गणपति विसर्जन तुमको ये बतलाता हूँ।
देखो बाबू , गणेश विसर्जन हमको ये समझाता है।
मिट्टी से जन्मे है हम सब,फिर मिट्टी में मिल जाते है।

मिट्टी से गणपति मूर्ति बनाकर,उनको पूजा जाता है।
प्रकृति से बनी मूरत को फिर प्रकृति को सौंपा जाता है।
जीवन चक्र मनुष्य का भी कुछ यूँही चलता जाता है।
अपने कर्मो को पूरा कर इंसान मिट्टी में मिल जाता है।

नीरज त्यागी
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश).

शीर्षक- मेरा प्यारा स्कूल

रचना - कविता

मेरा प्यारा स्कूल
मेरा प्यारा स्कूल
ना सकता मैं इसको भूल
ज्ञान का मंदिर
निःस्वार्थ भाव से देता ज्ञान
सीखा सदाचार
बड़ों का सम्मान है
कर देता समझदार
दिखाता सही मार्ग
जीवन खुशहाल
जाति-धर्म का न भेदभाव
चाहे वो हिंदू ,सिख या हो मुस्लिम
देता सबको बराबर ज्ञान
ज्ञान में है इतना बल
बदल सकती है पूरी दुनिया
यह महान है
महान है
यह महान है।

कवि -साहिल भुयान
भुवनेश्वर , ओडिशा

हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी प्यारी है।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी है,
हर दिन तेरी लीला न्यारी,
तू कर देती है मन मोहित,
जब सुबह होती प्यारी।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
सुबह होती तो गगन में छा जाती
लाली मां,
छोड़ घोसला पंछी उड़ जाते,
हर दिन नई राग सुनाते।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
कहीं धूप तो कहीं छाव लाती,
हर दिन आशा की नई किरण लाती,
हर दिन तू नया रंग दिखलाती।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
कहीं ओढ़ लेती हो धानी चुनर,
तो कहीं सफेद चादर ओढ़ लेती,
रंग भतेरे हर दिन तू दिखलाती।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
कभी शीत तो कभी बसंत,
कभी गर्मी तो कभी ठंडी,
हर ऋतु तू दिखलाती।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
कहीं चलती तेज हवा सी,
कही रूठ कर बैठ जाती,
अपने रूप अनेक दिखलाती।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
कभी देख तुझे मोर नाचता,
तो कभी चिड़िया चहचाती,
जंगल का राजा सिह भी दहाड़
लगाता।

?हे प्रकृति कैसे बताऊं तू कितनी
प्यारी,
हम सब को तू जीवन देती,
जल और ऊर्जा का तू भंडार देती,
परोपकार की तू शिक्षा देती,
हे प्रकृति तू सबसे प्यारी।

कवि राकेश चंद्र त्रिपाठी
भुवनेश्वर, ओडिशा

ग़ज़ल

कद्र मेरे इश्क की करने ना आयी
दिया दर्द उसने देखने ना आयी !
हम मोहब्बत करते रहे दिल से
मै जाता रहा वो बुलाने ना आयी !
हर पल तड़पते मरते रहे हम तो
कम दर्द मेरा वो करने ना आयी!
हुई कैसे हरजाई समझ मै ना पाया
सुन मैयत मेरी वो फिर भी ना आयी !

स्वरचित रचना
शैलेन्द्र गौड
अंबेडकर नगर उत्तर प्रदेश

देश प्रेम

प्रदीप 8 साल का छोटा सा बालक था जिस उम्र में बच्चे खेलते कूदते हैं उस उम्र में उसके मन में केवल एक ही भावना थी, दुश्मनों से अपने पिता की हत्या का बदला लेना और अपनी मातृभूमि की सेवा करना। वह पूरा मन लगाकर पढ़ाई करता, कठिन मेहनत करता अपनी मां के सभी कामों में हाथ बंटाता। पर भीतर ही भीतर उसका मन सदैव सुलगता रहता था। उसे लगता कि ईश्वर से कोई वरदान मिल जाए और वह आज 18-20 साल का जवान बन जाए और जाकर सेना में भर्ती हो जाए। जिससे शीघ्र से शीघ्र वह देश के दुश्मनों से अपने पिता की क्रूर हत्या का बदला ले सके और मातृभूमि पर लगे हुए कलंक को साफ कर सके। किंतु समय तो अपनी गति से ही आगे बढ़ता है। उसे बार-बार वही दृश्य सोते-जागते दिखाई देता, जब उसके पिता का

शव तिरंगे में लिपटा हुआ उसके घर के आंगन में आया था। जिसे देखकर मां बार-बार पछाड़ खाकर बेहोश होकर गिर रही थी और उसे संभालना मुश्किल हो गया था। प्रदीप के पिता अमित भारतीय सेना के एक वीर सैनिक थे। वह अपने क्षेत्र में ड्यूटी पर तैनात थे। किंतु पड़ोसी देश के दुश्मन सैनिकों ने उन्हें घेरकर मौत के घाट उतार दिया था। इतना ही नहीं बर्बरता पूर्वक और अमानवीय कृत्य करते हुए, एक वीर सैनिक का सर कलम कर दिया था। इस खबर से पूरा देश हिल गया था। देश की जनता, सरकार को भी धिक्कार रही थी कि वह इस अमानवीय कृत्य का शीघ्र से शीघ्र बदला ले। किंतु ऐसी स्थिति में सरकारें भी लाचार बन जाती हैं, और इस अपमान का एवं दुष्कृत्य का कोई समुचित बदला नहीं लिया गया। अब तो प्रदीप ने अपने मन में ठान लिया था कि वह बड़े होकर इस अपमान का बदला अवश्य लेगा और यही उसके जीवन का चरम लक्ष्य है। उसका जीवन देश सेवा के लिए ही समर्पित होगा।।

रंजना मिश्रा
कानपुर, उत्तर प्रदेश

बचपन की यादें

मुझे बचपन की याद आती है,
तो चेहरे पर मुस्कान छा जाती है।
बचपन में वो तोतली बोली,
वो प्यारी-प्यारी सूरत भोली।
वो स्कूल न जाने के बहाने बनाना,
कहीं छुपकर आईस्क्रीम खाना।
पापा से खिलौने मंगवाना,
मां के हाथों से खाना खाना।
अपनी बात पर हर बार अड़ना,
सबसे खूब झगड़ना।
खेलते-खेलते कहीं दूर निकल जाना,
घर पहुंचने के नये रास्ते खोज के आना।
मंदिर में घण्टी बजाने के लिये ऊंचकना,
पापा की डांट पर बाद में खूब हंसना।
सच बचपन सबसे प्यारा है,
जिससे महकता जीवन सारा है।

अंकिता जैन अवनी
लेखिका-कवियत्री
अशोकनगर मप्र

शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं के कार्यो में समझौता नहीं होगा - कलेक्टर

सीएम हेल्पलाइन को पिछले सप्ताह में न देखने पर चार अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस

मुरैना। शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं में अधिकारी गति लायें। योजनाओं के कार्यो में मैं किसी तरह का समझौता नहीं करूंगा। भले ही वो अधिकारी मेरे साथ पहले क्यों न कार्य कर चुका हो, सबके साथ एक जैसी कार्रवाही होगी। यह निर्देश नवागत कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने टीएल बैठक के दौरान कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में मंगलवार को समस्त अधिकारियों को दिये। बैठक में सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा के दौरान पिछले सप्ताह पोर्टल पर अवलोकन नहीं करने के आरोप में कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री तरूण भटनागर, अपर कलेक्टर श्री एसके मिश्रा, नगर निगम कमिश्नर श्री अमरसत्य गुप्ता, समस्त एसडीएम, समस्त जनपद सीईओ, समस्त सीएमओ सहित जे.एस.ओ. उपस्थित थे। नवागत कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने कहा कि अधिकारी सीएम हेल्पलाइन को तब्ज्जो नहीं दें रहे है, इस बैठक में कई ऐसे अधिकारी जिन्होंने पिछले सप्ताह सीएम हेल्पलाइन को खोलकर नहीं देखा है या उन्होंने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों को कम करने की कार्रवाही नहीं की है। इन अधिकारियों के खिलाफ कारण बताओ नोटिस जारी किया जाये। इस प्रकार की पुर्नावृत्ति आगे देखने को मिली तो ऐसे अधिकारियों के खिलाफतत्काल कार्रवाही होगी और वह कार्रवाही निलंबन से कम नहीं होगी। श्री वर्मा ने इस पर चार अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किये है। जिसमें जिला आपूर्ति नियंत्रक श्री भीम सिंह तोमर, सीएमओ कैलारस श्री अमजद गनी, सीएमओ सबलगढ़ श्री महेन्द्र गर्ग, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी

कैलारस श्री संजीव शर्मा के नाम शामिल है। कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने कहा कि नवीन पात्रता पर्ची एवं आधार सीडिंग का कार्य प्रदेश स्तर से चल रहा है। जिसमें पोर्टल पर नवीन परिवार की पात्रता पर्ची की स्वीकृति एवं राशन प्राप्त कर रहे परिवारों में नये सदस्यों की स्वीकृति की स्थानीय निकायवार प्रगति संतोषजनक नहीं है। इसमें जिले में प्राप्त लक्ष्य 1 लाख 67 हजार 251 में से मात्र 35 प्रतिशत कार्य नगरीय निकाय एवं जनपदों में किया गया है। जिसमें नगर परिषद कैलारस में 66 प्रतिशत, जनपद पंचायत कैलारस में 56 प्रतिशत, जनपद पंचायत जौरा में 54 प्रतिशत, नगर पालिका पोरसा में 41 प्रतिशत, जनपद पंचायत पोरसा में 39 प्रतिशत, नगर पालिका अंबाह में 38 प्रतिशत, जनपद पंचायत अंबाह में 31 प्रतिशत, नगर निगम मुरैना में 21 प्रतिशत, जनपद पंचायत मुरैना में 42 प्रतिशत, जनपद पंचायत सबलगढ़ में 14 प्रतिशत, जनपद पंचायत पहाडागढ़ में 25 प्रतिशत, नगर पालिका सबलगढ़ में 12 प्रतिशत, नगर परिषद झुण्डपुरा में 3 प्रतिशत, नगर परिषद जौरा में 2 प्रतिशत और नगर परिषद बानमौर में 14 प्रतिशत तक ही फीडिंग कार्य किया है। यह स्थिति बेहद चिन्ताजनक है। समय-सीमा तक यह कार्य ऑनलाइन नहीं हुआ तो लोग राशन से वंचित हो सकते है। इसके जिम्मेदार अधिकारी होंगे। इस कार्य के लिये दो दिवस के अंदर सभी नगरीय निकाय एवं सीएमओ करायें। भले ही इसके लिये अतिरिक्त कम्प्यूटर ऑपरेटर लगाये, किन्तु यह कार्य दो दिवस के अंदर होना चाहिये। मैं किसी कार्य के बारे में एक बार ही बोलूंगा। बार-बार बोलने की आदत नहीं, दूसरी बार बोलूंगा तो सीधे कार्रवाही होगी। कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन को कोई भी अधिकारी फोर्सली क्लोज नहीं करायेगा। ये कोई समस्या का हल नहीं है। यही शिकायतें बार-बार लौटकर पुन: आती है। टीएल पत्रों की समीक्षा: कलेक्टर श्री वर्मा ने टीएल पत्रों की समीक्षा की। जिसमें कई विभागों द्वारा 7-8 माह तक आवेदनों का निराकरण नहीं किया है। पोर्टल पर इस प्रकार की शिकायतें लगातार दिख रहीं है। कलेक्टर ने कहा कि टाइम लिमिट के पत्रों की म्याद 7 दिन अधिक से अधिक 14 दिन तक निराकरण करने की होती है।

स्वास्थ्य अधिकारी कोविड के प्रति रहें गंभीर - कलेक्टर

अधिकारी अभी यह नहीं सोचे कि कोविड मुरैना से चला गया है। अभी भी कोविड के मरीज लगातार मिल रहे है। इसके लिये स्वास्थ्य अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि जहां कंटेनमेंट एरिया बनाये गये है, वहां के लोंगो के शतप्रतिशत सैम्पलिंग हो जाये और प्रतिदिन मुझे सभी प्रकार की रिपोंटें जो पोर्टल पर अपलोड की जाती है, उनका अवलोकन करावें। उन्होंने कहा कि ब्लॉक स्तर पर कई दिन जांचे नहीं की जा रही है। ऐसा होना नहीं चाहिये। शनिवार हो या रविवार जांचे प्रत्येक विकासखण्ड पर होनी चाहिये। जांच के लिये किसी प्रकार का अवकाश मान्य नहीं होगा। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि कोविड मरीज को प्रतिदिन 300 रूपये का भोजन उपलब्ध कराया जाता है, उसे उसी डायट के अनुसार इम्युनिटी बढ़ाने वाला भोजन साप्ताहिक मीन्यू के हिसाब से दिलाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि अभी बैक्सीन तैयार नहीं हुई है, अभी कोरोना से इसी प्रकार लड़ाई लड़ना है। बैक्सीन आने पर ही समस्या का हल निकलेगा।

कलेक्टर ने बाढ़ के संबंध में अधिकारियों को दिये निर्देश

कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने समस्त एसडीएम एवं तहसीलदार तथा समस्त जिला अधिकारियों को कड़े निर्देश दिये है कि गुजरात, राजस्थान के कोटा सहित मध्यप्रदेश के मंदसौर, नीमच सहित अन्य जिलों में वर्षा लगातार हो रही है। इस कारण डेमों से पानी चंबल नदी में छोड़ा जा रहा है। चंबल नदी इस समय 134 मीटर पर बह रही है। पिछले साल भी चंबल में आई बाढ़ से कई गांव पानी से घिर चुके थे। भविष्य में अगर पानी और ऊपर गिरता है तो कई गांव मुरैना जिले के पानी से घिर जायेंगे। इसके लिये अधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों के ऐसे गांवों का भ्रमण कर लें, जो गांव पानी की चपेट में आ सकते है। कलेक्टर ने कहा कि चंबल नदी में अगर 138 पर पानी पहुंचता है तो जिले के कई गांवों में पानी पहुंचने का खतरा रहेगा। इन गांवों में अधिकारी भ्रमण करें और वहां उन ग्रामीणों को शिफ्ट करने एवं भोजन, पानी के प्रबंध करें। जिसमें सबलगढ़ विकासखण्ड के कैमारादकलां, गोदौली, कलरघटी, अंबाह के ग्राम वीरपुर, कुथियाना और पोरसा तहसील के ग्राम रतनबयई, लुधावली और रायपुर गांव में पानी पहुंच सकता है।

विभिन्न आरोपों में मुख्य नगर पालिका अधिकारी पोरसा को कारण बताओ नोटिस दिया

मुरैना। विभिन्न आरोपों में नगर पालिका पोरसा के मुख्य नगरपालिका अधिकारी नत्थीलाल करौलिया को चंबल संभाग के कमिश्नर श्री आर.के. मिश्रा ने पुन: नोटिस जारी कर 3 दिवस के अंदर जबाव चाहा है। नोटिस में कहा है कि सी.एम.ओ. पोरसा नत्थीलाल करौलिया को 7 अगस्त 2020 को भ्रष्टाचार के आरोप में पोरसा करौलिया को नोटिस जारी कर 7 दिवस के अंदर जबाव चाहा था, किन्तु करौलिया ने कोई भी जबाव नहीं दिया। इनके द्वारा वरिष्ठ कार्यालय द्वारा जारी पत्राचार का कोई महत्व न दिया जाकर अपनी मनमर्जी से कार्यो का सम्पादन किया जा रहा है। जो कदाचरण की श्रेणी में आता है। सी.एम.ओ. पोरसा में नगर पालिका की निर्माण शाखा में सहायक राजस्व अधिकारी कुम्हेर सिंह द्वारा एक-एक लाख रूपये के फर्जी प्रकरण तैयार करने के आरोप में कुम्हेर सिंह के विरूद्ध आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरों में शिकायतें प्रचलित होने के उपरान्त भी इनकी पदोन्नति संबंधी कार्रवाही की जाने एवं श्री राजेश श्रीवास्तव संविदा सहायक ग्रेड-2 नगर पालिका पोरसा द्वारा माननीय उच्च न्यायालय में दायर याचिका में स्थगन होने के अपरान्त भी कोई कार्रवाही नहीं करने सहित सीएमओ पोरसा पर अन्य कई आरोप है। जो उनके पदीय कर्तव्यों के निर्वहन में उदासीनता एवं लापरवाही करना परिलक्षित होता है।

चंबल संभाग के कमिश्नर आज पूर्वान्ह 11 बजे से रोजगार मूलक योजनाओं की समीक्षा करेंगे

चंबल संभाग के कमिश्नर 26 अगस्त को पूर्वान्ह 11 बजे अपने सभाकक्ष में रोजगार मूलक योजनाओं से जुड़े विभागों की कार्ययोजनाओं की संभागीय समीक्षा करेंगे। रोजगार मूलक योजनाओं से जुड़े विभागों में उद्योग एवं व्यापार केन्द्र, कुटीर एवं ग्रामोद्योग, हाथकरघा एवं हस्तशिल्प, पिछड़ावर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण, अन्त्यव्यवासायी और आदिवासी वित्त विकास निगम की समीक्षा करेंगे। इसी बैठक के पश्चात् 2.30 बजे चंबल कमिश्नर श्री मिश्रा आबकारी, परिवहन, खनिज और पंजीयन एवं मुद्रांक विभाग की समीक्षा होगी।

विश्व शांति के लिए कराई अखंड रामायण

पोरसा। विश्व शांति के लिए श्री गिरिराज जी मंदिर पोरसा पर महंत राम किशोर दास शास्त्री के सानिध्य में अखंड रामायण पाठ का आयोजन किया गया श्री गिरिराज जी मंदिर पोरसा पर अखंड रामायण पाठ का आयोजन किया गया विश्व शांति की कामना के लिए आयोजित इस अखंड रामायण में अखंड रामायण पाठ में महंत राम किशोर शास्त्री ,पंडित

जगदीश प्रसाद शुक्ला ,रामवीर सिंह तोमर, रामसेवक सिंह सिकरवार,अमित सिंह तोमर, संदीप सिंह तोमर, सोबरन सिंह परमार ,अनिल सिंह भदोरिया, सत्यवीर सिंह सिकरवार, पवन सिंह सिकरवार ,आदि के द्वारा अखंड रामायण पाठ को सफल कराया गया इस पाठ के माध्यम से भगवान से मन्नत मांगी गई भगवान विश्वशांति करने की कृपा करें एवं कोरोनावायरस नामक महा बीमारी को शांत करें

हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने ली भाजपा की सदस्यता

पोरसा अम्बाह // भारतीय जनता पार्टी के द्वारा तीन दिवसीय महा सदस्यता अभियान कार्यक्रम में अंबाह विधानसभा से पूर्व विधायक कमलेश जाटव के समर्थन में हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता प्रदेश व केंद्र नेतृत्व के समक्ष ली महा सदस्यता अभियान कार्यक्रम ग्वालियर के फूलबाग मैदान पर

आयोजित किया गया जिसमें प्रमुख रूप से मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा जिला अध्यक्ष डॉ योगेश पाल गुप्ता पूर्व विधायक गजराज सिंह सिकरवार पूर्व विधायक कमलेश सुमन पूर्व विधायक बंशीलाल जाटव पूर्व विधायक कमलेश जाटव विधानसभा प्रभारी मुन्ना सिंह भदोरिया बच्चू लाल गुप्ता संचालक विधानसभा मन्ना सिंह तोमर संयोजक विधानसभा खेम सिंह भदोरिया गजेंद्र सिंह तोमर पूर्व मंडल अध्यक्ष अरुण गुप्ता नगर मंडल अध्यक्ष राम कुमार गुप्ता जिनेश जैन टिल्लू तोमर नागेंद्र चौहान बंटी कटारे बंटी राजौरिया लवला पंडित पीयूष कतरोलिया आदि लोगो ने हजारों की संख्या में भाजपा की सदस्यता ली

पंच "ज" कार्यक्रम अंतर्गत किया गया पौधरोपण

मुरैना। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार जिला जज एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री सुबोध कुमार जैन के मार्गदर्शन में अपर जिला जज एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री व्ही.के. गुप्ता के तत्वाधान में रायचंद्र का पुरा मुरैना में पैरालीगल वॉलेटियर्स एवं अन्य द्वारा पौधरोपण किया गया साथ ही पर्यावरण को स्वच्छ रखने तथा पर्यावरण के लाभ के बारे ग्रामीणजन को बताया तथा पौधो की देखरेख व संरक्षण के लिये आवश्यक जानकारी दी गई।

अनियंत्रित ट्रेक्टर ट्राली ने बाईक सवार को सामने से मारी टक्कर एक की मौत एक घायल

मुरैना। थाना क्षेत्र के रजोधा गांव के पास एक बाइक सवार को ट्रैक्टर चालक ने सामने से मारी टक्कर जिसमें एक युवक पिंटू कुशवाह ने घटनास्थल पर अपनी दम तोड़ दी , दूसरा घायल लव कुश कुशवाह जिसका पोरसा हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है ,बीती रात 7-00 बजे की घटना है घायल को पोरसा चिकित्सालय में इलाज के लिये लाया गया, यह दोनों चचेरे भाई अपनी बहन के यहां फूप बघपुरा जिला भिंड दूल्हा का मोहर छद देकर आ रहे थे बाईक से दोनों पिन्टू कुशवाह गडेर भिण्ड से अपने चचेरे भाई लवकुश को साथ औरेठी गांव आ रहा था वहां पर यह दोनों लोग नाश्ते की दुकान चलाते थे लेकिन ओरेठी तक नहीं पहुंच पाए और रजोधा के पास जोरदार एक्सीडेंट हुआ जिसमें पिंटू कुशवाह ने अपनी दम तोड़ दी व लव-कुश कुशवाह ज्यादा घायल होने की वजह से पोरसा हॉस्पिटल से जिला हॉस्पिटल के लिए रेफर किया गया आगे की कार्रवाई नगरा पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में ली है पुलिस ने ट्रैक्टर चालक के खिलाफ किया मामला दर्ज कर लिया है पिंटू कुशवाह अपने घर की जीविका चलाने के लिए लॉकडाउन से पहले गुजरात में काम करता था लॉकडाउन के चलते पिंटू गुजरात छोड़कर अपने ग्रह ग्राम आ चुका था यहां जीविका चलाने के लिए चाट का ठेला लगाकर गुजर-बसर कर रहा था पिंटू कुशवाहा की मृत्यु हो जाने से परिवार पर जिविका का संकट आयेगा

एफ.एस.टी उड़नदस्ता दल में दो कार्यपालिक मजिस्ट्रेट बदले

मुरैना। उप निर्वाचन 2020 के लिये पूर्व में गठित एफएस.टी. उड़नदस्ता दल में जौरा के लिये श्री गोपालदास और मुरैना विधानसभा के लिये श्री एके कुलश्रेष्ठ को कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में लगाया था, अब इन दोनों अधिकारियों के स्थान पर नवीन कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में विधानसभा क्षेत्र 04 जौरा के लिये शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय जौरा के प्राचार्य श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य को लगाया है। श्री आर्य सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक मतदान केन्द्र क्रमांक 160 से 279 तक का कार्य देखेंगे। विधानसभा क्षेत्र 06 मुरैना के लिये शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय क्रमांक-1 मुरैना के प्राचार्य श्री गोपाल सिंह परमार को नवीन कार्यपालिक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया है। श्री परमार रात्रि 8 से सुबह 8 बजे तक मतदान केन्द्र क्रमांक 252 से 322 के मतदान केन्द्रों की निगरानी करेंगे। फएस.टी. दल द्वारा विधानसभा क्षेत्रान्तर्गत अवैध शराब वितरण, रिश्वत की मदों या बड़ी मात्रा में नगदी, अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद और समाज विरोधी तत्वों की आवाजाही पर निगाहें रखी जायेंगी। जांच के दौरान संपूर्ण प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई जाकर एफएस.टी. द्वारा दैनिक गतिविधियों की रिपोर्ट नियमित रूप से पुलिस अधीक्षक, सहायक रिटर्निंग ऑफीसर, जिला निर्वाचन अधिकारी तथा प्रेक्षक को नियमित रूप से दी जायेगी। सभी अधिकारी कोविड-19 के निशा-निर्देशों का पालन अनिवार्यत: करेंगे। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसरण में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उप निर्वाचन 2020 की घोषणा की तारीख से मतदान की समाप्ति तक अपने विधानसभा क्षेत्र में उन्हें सौंपे गये दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

सभी नोडल अधिकारी चुनावी कार्यो के सौंपे गये दायित्वों का पूरी तरह से निर्वहन करें - कलेक्टर वर्मा

मुरैना। विधानसभा उप चुनाव 2020 के चुनाव संपन्न कराने के लिये नोडल अधिकारियों को सौंपे गये कार्यो के दायित्वों को पूरी निष्ठा लगन के साथ पूरा करें। सभी अधिकारी चुनावी कार्यो में पूरी पारदर्शिता के साथ निडर होकर कार्य करें। आयोग से प्राप्त होने वाले दिशा-निर्देशों से अपडेट रहें। हम चुनावी नियमों दिशा-निर्देशों को जितना पढ़ेंगे उतना ही अच्छा हम चुनाव करा सकेंगे। यह निर्देश कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अनुराग वर्मा ने चुनाव कार्यो में लगे सभी नोडल अधिकारियों को दिये। श्री वर्मा मंगलवार को अपने सभाकक्ष में नोडल अधिकारियों को सौंपे गये चुनावी दायित्वों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में जिला पंचायत के सीईओ श्री तरूण भटनागर, एडीएम श्री एसके मिश्रा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री एलके पाण्डे सहित विभिन्न विभागों के बनाये गये नोडल अधिकारी उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुये जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने कहा कि स्वतंत्र,

निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण उप चुनाव संपन्न कराने के लिये सभी तैयारियां अभी से पूर्ण की जायें। नोडल अधिकारियों को जो-जो दायित्व सौंपे है, उनका निष्ठापूर्वक निर्वहन करें। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय हर व्यक्ति की निगाह अधिकारियों की ओर रहेगी। सभी अधिकारी पूरी निष्पक्षता, पारदर्शिता से निडर होकर चुनाव कार्यो को संपादित करें। उन्होंने कहा कि सभी सेक्टर अधिकारी, एसडीएम, तहसीलदार अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केन्द्रों की विजिट करके वहां की असुविधाओं को दूर करें। मतदान केन्द्र पर मतदाताओं को कौन सी कहां दिक्कत आयेगी, उसका समाधान होना चाहिये। प्रत्येक मतदान केन्द्र पर रैम्प, बिजली, पेयजल, छाया की व्यवस्था सुनिश्चित हो। हर मतदान केन्द्र पर दिव्यांगों की संख्या के अनुरूप एक से अधिक व्हीलचेयर की सभी व्यवस्था कोविड-19 के तहत दिये गये दिशा-निर्देशों के अनुरूप हो। कम्यूनिकेशन प्लान तैयार किया जाये। उन्होंने जिला पंचायत सीईओ को निर्देश दिये कि वे रेण्डमाइजेशन द्वारा मतदान दलों का गठन, मतदान कर्मियों के नियुक्ति आदेश मतगणना हेतु श्रेणी अनुसार कर्मचारियों की आवश्यकता का आंकलन उनका डाटवेश तैयार करने के निर्देश दिये। जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री को स्तरीय जांच, प्रथम एवं द्वितीय रेण्डमाईजेशन, मतदान केन्द्र पर ईव्हीएम का चयन, ईव्हीएम की कमीशनिंग बैलेट पेपर का मुद्रण सहित अन्य कार्यो को निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने इस बार विधानसभा स्तर पर प्रतिशक्षण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने अपर कलेक्टर को निर्वाचन के दौरान कानून व्यवस्था को बनाये रखने, आवश्यक वाहनों का अधिग्रहण करने, चुनाव के दौरान प्राप्त शिकायतों को निर्धारित समयावधि में निराकरण कर आयोग को सूचित करें, कलेक्टर ने जिला पेंशन अधिकारी को निर्वाचन व्यय, मानदेय, अभ्यर्थियों के व्यय लेखा, जिला प्रबंधक ई-गवेंनेंश को संचार एवं सूचना प्रबंधन करने, विभिन्न टेलीकॉम कंपनियों से संपर्क करने, उप जिला निर्वाचन अधिकारी को सामग्री का वितरण करने, जिला शिक्षाधिकारी को पोस्टल बैलेट तैयार करने, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी को सेवा निर्वाचकों ई.टी.पी.वी.एस. के माध्यम से वोट डलवाने की प्रक्रिया पर समझाईश दी। बैठक में अन्य नोडल अधिकारियों से भी उनके कार्यो के संबंध में पूछताछ की। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री पाण्डे ने आयोग द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान कोविड-19 के तहत बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तृत रूप से बताया।

वास्तु दोष भी हरते हैं विघ्नहर्ता

यदि आपका घर वास्तु दोष से भरा है तो अब चिंता की कोई बात नहीं क्योंकि आपके पास चिंतामण, विघ्नहर्ता गणपति बप्पा का आशीर्वाद है. वास्तु देवता की संतुष्टि के लिए भगवान गणेश जी को पूजना बेहतर लाभ देगा. इनकी आराधना के बिना वास्तुदेवता को संतुष्ट नहीं किया जा सकता. बिना तोड़-फोड़ अगर वास्तु दोष को दूर करना चाहते हैं तो इन्हें आजमाएं. गणपति जी का वंदन कर वास्तुदोषों को शांत किए जाने में किसी प्रकार का संदेह नहीं होता है. मान्यता यह है कि नियमित गणेश जी की आराधना से वास्तु दोष उत्पन्न होने की संभावना बहुत कम होती है. इससे घर में खुशहाली आती है और तरक्की होती है. यदि घर के मुख्य द्वार पर एकदंत की प्रतिमा या चित्र लगाया गया हो तो उसके दूसरी तरफ ठीक उसी जगह पर गणेश जी की प्रतिमा इस प्रकार लगाए कि दोनों गणेशजी की पीठ मिली रहे. इस प्रकार से दूसरी प्रतिमा या चित्र लगाने से वास्तु दोषों का शमन होता है. भवन के

जिस भाग में वास्तु दोष हो उस स्थान पर घी मिश्रित सिंदूर से स्वास्तिक दीवार पर बनाने से वास्तु दोष का प्रभाव कम होता है. घर या कार्यस्थल के किसी भी भाग में वक्रतुण्ड की प्रतिमा अथवा चित्र लगाए जा सकते हैं. किंतु प्रतिमा लगाते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि किसी भी स्थिति में इनका मुंह दक्षिण दिशा या नैर्ऋत्य कोण में नहीं हो. इसका विपरीत प्रभाव होता है. घर में बैठे हुए गणेश जी तथा कार्यस्थल पर खड़े गणपति जी का चित्र लगाना चाहिए, किंतु यह ध्यान रखें कि खड़े गणेश जी के दोनों पैर जमीन का स्पर्श करते हुए हों. इससे कार्य में स्थिरता आने की संभावना रहती है. भवन के ब्रह्म स्थान अर्थात् केंद्र में, ईशान कोण एवं पूर्व दिशा में सुखकर्ता की मूर्ति अथवा चित्र लगाना शुभ रहता है. किंतु टॉयलेट अथवा ऐसे स्थान पर गणेशजी का चित्र नहीं लगाना चाहिए जहां लोगों को थूकने आदि से रोकना हो. यह गणेशजी के चित्र का अपमान होगा. सुख, शांति, समृद्धि की चाह रखने वालों के लिए घर में सफेद रंग के विनायक की मूर्ति, चित्र लगाना चाहिए. सर्व मंगल की कामना करने वालों के लिए सिंदूरी रंग के गणपति की आराधना अनुकूल रहती है. इससे शीघ्र फल की प्राप्ति होती है. विघ्नहर्ता की मूर्ति अथवा चित्र में उनके बाएं हाथ की ओर सूंड घुमी हुई हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए. दाएं हाथ की ओर घुमी हुई सूंड वाले गणेश जी हठी होते हैं तथा उनकी साधना-आराधना कठिन होती है. शास्त्रों में कहा गया है कि दाएं सूंड वाले गणपति देर से भक्तों पर प्रसन्न होते हैं.मंगल मूर्ति भगवान को मोदक एवं उनका वाहन मूषक अतिप्रिय है. अतः घर में चित्र लगाते समय ध्यान रखें कि चित्र में मोदक या लड्डू और चूहा अवश्य होना चाहिए. इससे घर में बरकत होती है. इस तरह आप भी बिना तोड़-फोड़ के गणपति पूजन के द्वारा से घर के वास्तुदोष को दूर कर सकते हैं.

साबुत अनाज सेहत का खजाना

साबुत अनाज सेहत के लिए लाभाकारी होता है। साबुत अनाज में रेशा युक्त बाहरी सतह और पोषकता से भरपूर बीज भी शामिल है। साबुत अनाज सेहत से भरपूर होता है। भूसी एवं बीज से विटामिन ई, विटामिन बी और अन्य तत्व जैसे जस्ता, सेलेनियम, तांबा, लौह, मैगनीज एवं मैग्नीशियम आदि प्राप्त होते हैं। इनमें रेशा भी प्रचुर मात्र में पाया जाता है। जानकारों के मुताबिक साबुत अनाज कार्बोहाइड्रेट का भंडार होता है जो सेहत के लिहाज से बहुत अच?छा होता है। साबुत अनाज का सेवन करने वाले लोगों को मधुमेह, कोरोनरी धमनी रोग, पेट का कैंसर और उच्च रक्तचाप जैसे रोगों की आशंका कम हो जाती है। साबुत अनाज में पाए जाने वाले फाइबर अंश पेट में गैस बनने की प्रक्रिया कम करते हैं एवं पेट में स्थिरता का आभास होता है, इसलिए ये शारीरिक वजन को कम करने में सहायता करते हैं। साबुत अनाज और साबुत दालें प्रतिदिन के आहार में अवश्य सम्मिलित करने चाहिये। इस प्रकार के अनाज को उचित मात्रा में सेवन पेट को दुरुस्त रखता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढती है।

गर्भावस्था में पौष्टिक आहार मां-बच्चे के लिए फायदेमंद

मंदवेलिंगटन एक नए अध्ययन में पता चला है कि गर्भावस्था के दौरान ज्यादा भोजन करने के बजाए पौष्टिक भोजन करना जच्चा-बच्चा, दोनों के लिए वजन संतुलन में सहायक होता है। न्यूजीलैंड में युनिवर्सिटी ऑफ ऑकलैंड की प्रसूति एवं स्त्री रोग की प्रोफेसर, लेजली मैकॉन कहती हैं, बड़े शिशु बड़े बच्चे बनते हैं और बाद में बड़े वयस्क। यदि हम इस पर रोक लगा सकें तो जन स्वास्थ्य पर इसका एक बड़ा असर हो सकता है। मैकॉन की अध्यक्षता में किए गए अध्ययन से इस बात का पता चला कि पहली बार गर्भधारण करने वाली महिलाओं में से 74 प्रतिशत महिलाएं अतिरिक्त वजन का शिकार होती हैं। ऑकलैंड युनिवर्सिटी के एक बयान के अनुसार मैकॉन ने कहा, अधिक वजन वाले शिशुओं के जन्म में कई तरह की परेशानियां पेश आती हैं और मां के स्वास्थ्य और जान पर खतरा बढ़ जाता है। मैकॉन ने कहा कि यदि गर्भावस्था के दौरान खान-पान में सावधानी बरती जाए तो भविष्य में मोटापे का खतरा कम हो सकता है। गर्भावस्था के दौरान

अतिरिक्त वजन बढ़ाने वाली महिलाएं बाद में वजन कम करने में असफल होती हैं और इससे महिलाओं में मोटापा बढ़ता है। शोध के परिणाम से पता चलता है कि सामान्य वजन का ध्यान रखना मां और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रदूषण भी बन सकता है दिल के दौरे का कारण

प्रदूषण भी बन सकता है दिल के दौरे का कारण वाशिंगटन अमेरिका में हुए एक हालिया शोध में चेतावनी दी गई है कि

हृदयाघात के बढ़ते मामलों के पीछे वायु प्रदूषण तथा ओजोन परत का क्षरण होना भी हो सकता है। राइस विश्वविद्यालय (हॉस्टन) में सांख्यिकीविद कैथरीन एंसॉर तथा लॉरेन राउन ने ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के, वायु की गुणवत्ता का आकलन करने वाले गहन नेटवर्क द्वारा संकलित पिछले आठ वर्षो के आकड़ों तथा ह्यूस्टन आपात चिकित्सा सेवा(ईमएस) द्वारा दर्ज 11,000 से अधिक हृदयाघात के मामलों का विश्लेषण किया। एंसॉर कहती हैं, इस अध्ययन का मूल उद्देश्य लोगों के जीवन की रक्षा करनी है। वह आगे बताती हैं, हम प्रत्येक व्यक्ति के लिए खतरे की सूचना देने वाली बेहतर चेतावनी प्रणाली के विकास में सहयोग करना चाहते हैं। वायु प्रदूषण की सामान्य चेतावनी बेहतर नहीं हो सकती। इसके साथ ही हम वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य को होने वाले खतरे की समझ को और बेहतर करना चाहेंगे और वायु प्रदूषण को लगातार कम होता देखना पसंद करेंगे। शोधकर्ताओं ने वायु में मौजूद नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड और कार्बन मोनो ऑक्साइड के स्तर का भी विश्लेषण किया, लेकिन हृदयाघात पर इनमें से किसी के प्रभाव के प्रमाण नहीं मिले। बोस्टन में हुए क्ष्अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ एडवांसमेंट ऑफ साइंसक्ष (एएएएस) समारोह में यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया।

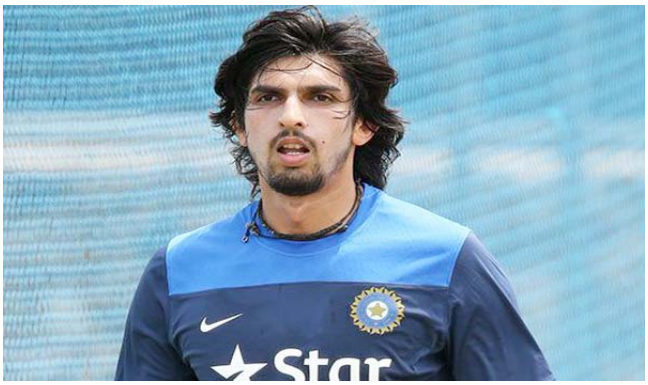

अर्जुन पुरस्कार मिलने को लेकर अपने पर गर्व हो रहा : इशांत

नई दिल्ली। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज इशांत शर्मा ने कहा है कि उन्हें अपनी 13 साल की मेहनत के कारण ही अर्जुन पुरस्कार मिल रहा है और इसको लेकर उन्हें अपने पर गर्व है। इशांत के अनुसार इससे उनका पूरा परिवार उत्साहित है। इशांत के अनुसार उनसे अधिक उनका परिवार विशेषकर उनकी पत्नी प्रतिमा सिंह इस उपलब्धि पर गर्व का अनुभव कर रही हैं। इशांत ने अपने संदेश में कहा, ''जब मुझे पता चला कि मुझे अर्जुन पुरस्कार मिल रहा है तो मैं काफी खुश हुआ और अपने ऊपर गर्व महसूस करने लगा। पिछले 13 साल में मैंने काफी कड़ी मेहनत की है इसलिए यह मेरे और मेरे परिवार के लिए गौरव का क्षण है।'' उन्होंने कहा, ''मेरे से अधिक मेरी पत्नी को मुझ पर गर्व है क्योंकि उसका मानना था कि मुझे पुरस्कार मिलना चाहिए था ।'' इशांत ने साल 2007 में भारत की ओर से पदार्पण करने के बाद 97 टेस्ट और 80 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं। इस गेंदबाज ने कहा कि व्यक्ति प्रदर्शन के बारे में सोचने की जगह मेरी प्राथमिकता हमेशा ही मैच जीतना होती है। उन्होंने कहा, ''भारतीय टीम की मानसिकता यह है कि कैसे जीता जाए, हमारे लिए यह सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है, इसलिए हम व्यक्तिगत प्रदर्शन के बारे में नहीं सोचते।'' टीम हर बल्लेबाज के हिसाब से रणनीति बनाती है। हम मैदान पर अपनी योजनाओं को अमल में लाने का प्रयास करते हैं।''

खाली स्टेडियम से नहीं कम होगा आईपीएल का स्तर : लक्ष्मण

दुबई । पूर्व क्रिकेट और सनराइजर्स हैदराबाद के बल्लेबाजी मेंटर वीवीएस लक्ष्मण के अनुसार खाली स्टेडियम में आईपीएल मुकाबले होने से इसके खेल के स्तर में कमी नहीं आएगी। कोरोना वायरस महामारी के कारण इस बार आईपीएल मुकाबलों के दौरान दर्शकों को प्रवेश की अनुमति नहीं रहेगी। आईपीएल का आयोजन 19 सितंबर से 10 नवंबर तक यूएई के दुबई, अबू धाबी और शारजाह में होगा। लक्ष्मण ने कहा, 'मैं खेल के सभी प्रशंसकों को आश्वस्त कर सकता हूं कि स्टेडियम में दर्शकों की गैरमौजूदगी में भी वे वास्तव में प्रतियोगिता का आनंद लेंगे।% उन्होंने कहा, 'यह मत सोचिए कि इससे क्रिकेट की ऊर्जा या गुणवत्ता में कमी आएगी।% हालांकि वह पिचों को लेकर थोड़ा चिंतित जरूर दिखे।

अर्जुन पुरस्कार के लिए चयनित होने से ओलंपिक के लिए प्रेरणा मिलेगी : दुती

नई दिल्ली। भारत की शीर्ष धाविका दुती चंद ने कहा है कि अर्जुन पुरस्कार के लिए चयन से उन्हें 'ओलंपिक क्वालीफिकेशन मार्क% हासिल करने की प्रेरणा मिलेगी। दुती को 26 अन्य खिलाड़ियों के साथ अर्जुन पुरस्कार के लिए चुना गया है। 2018 एशियाई खेलों में 100 मीटर और 200 मीटर दोनों की रजत विजेता दुती का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 11.22 सेकेंड का है जो उन्होंने पिछले साल हासिल किया था। दुती ने 11.32 सेकेंड के 'क्वालीफाइंग मार्क% को हासिल कर रियो ओलंपिक के लिये क्वालीफाई किया था हालांकि इस बार यह 11.15 सेकेंड है। दुती ने कहा, 'यह पुरस्कार सही समय पर मिला है। साथ ही कहा कि आपके प्रदर्शन और उपलब्धियों का सरकार द्वारा किसी भी तरह सम्मान किया जाना हमेशा खिलाड़ी के आत्मविश्वास को बढ़ाता है।% उन्होंने कहा, 'इससे मुझे ओलंपिक के लिये मेरे प्रयासों को और अच्छा करने के लिए मजबूती मिलेगी और मेरा आत्मविश्वास बढ़ेगा। मुझे अगले साल टोक्यो में अपने दूसरे ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने और बेहतर प्रदर्शन करने की भी उम्मीद है।% दुती ने कहा, '11.15 सेकेंड का समय निकालना कठिन होगा पर मुझे पूरा भरोसा है कि मैं इसे हासिल कर लूंगी। इस पुरस्कार से मेरे प्रयासों को ताकत मिलेगी।%

धोनी को फेयरवेल मैच मिलना चाहिए था : सानिया

हैदराबाद । भारतीय महिला टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा ने कहा है कि भारतीय टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी को फेयरवेल मैच मिलना चाहिए था हालांकि उन्होंने चुपचाप संन्यास की घोषणा कर दी और यही चीज उन्हें बाकि खिलाड़ियों से अलग बनाती है। सानिया ने साथ ही कहा कि धोनी ने मैदान में जो किया उसके मायने ज्यादा हैं, ना कि एक फेयरवेल मैच को आयोजित किये के। सानिया ने साथ ही कहा, मेरे हिसाब से वो इतने बड़े स्तर के खिलाड़ी हैं, कि उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उन्हें औपचारिक फेयरवेल दिया जाता है या नहीं। उनकी इतनी उपलब्धियां हैं, इसीलिए उन्होंने कहा कि मैं चुपचाप संन्यास लूंगा। शांत रहकर अहम फैसले लेने की उनकी यही खूबी उन्हें कैप्टन कूल बनाती है। उन्होंने ना केवल अपने लिए बल्कि अपने देश के लिए काफी कुछ हासिल किया है। मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने उनके दौर में ही टेनिस खेला है।

ड्रैग फ्लिक से मिली सफलता : गुरजीत

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम की खिलाड़ी गुरजीत कौर ने कहा कि ड्रैग फ्लिक की कला सीखने से उन्हें अपने करियर में खास लाभ हुआ है। इससे उन्हें राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए सफलता हासिल करने में सहायता मिली है। गुरजीत साल 2018 में एशियाई खेलों में रजत पदक जीतने वाली भारतीय टीम में शामिल थीं। उन्होंने पिछले साल महिला एफआईएच सीरीज फाइनल्स में सबसे ज्यादा गोल किये थे। गुरजीत ने कहा, ''ड्रैग फ्लिक करने की तकनीक की अच्छी तरह से सीख मेरे करियर के लिए अहम रही। हॉकी टीम में हर किसी की अपनी भूमिका होती है और मुझे खुशी है कि मैंने अपनी टीम के लिये एक अच्छी ड्रैग फ्लिकर बनने के प्रयास किये हैं। 'उन्होंने कहा, ''मुझे मेरा करियर आगे बढ़ने के साथ ड्रैग फ्लिक सीखने और उसमें अभ्यस्त बनने में अपनी साथियों और कोचों से भी काफी सहायता मिली है।''उन्होंने कहा कि जूनियर राष्ट्रीय शिविर से जुड़ने से पहले वह ड्रैग फ्लिकिंग की कला को अच्छी तरह नहीं जानती थीं। गुरजीत ने कहा, ''मुझे 2012 में जूनियर राष्ट्रीय शिविर से जुड़ने से पहले ड्रैग फ्लिकिंग के बारे में ज्यादा पता नहीं था। मैंने शिविर से जुड़ने से पहले ड्रैग फ्लिक का अभ्यास किया था पर मुझे इस तकनीक की बारीकियों की जानकारी नहीं थी। '' उन्होंने कहा, ''जब मैं शिविर से जुड़ी तभी मैं ड्रैग फ्लिकिंग के बेसिक्स को समझ पायी और फिर मैं इसमें अनुभव हासिल करने लगी।'

ऑफ स्पिनर बेस ने एंडरसन को महान खिलाड़ी बताया

साउथैंपम्टन। ऑफ स्पिनर डॉम बेस के अनुसार तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन इंग्लैंड के सर्वकालिक महान खिलाड़ी हैं। एंडरसन टेस्ट में इंग्लैंड के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी हैं। बेस ने कहा, वह गेंदबाजी के सर्वकालिक महान और इंग्लैंड के महानतम खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा, प्वाइंट पर खड़े होकर उन्हें बल्लेबाजों को आउट करते हुए देखना, पैड पर मारते हुए देखना शानदार है। बेस ने कहा, हाल में उनके खेल को अलविदा कहने की खबरें चल रही थीं पर उन्होंने वापसी की और शानदार प्रदर्शन किया। यह बताता है कि वह कितने बेहतर खिलाड़ी हैं। एंडरसन ने इंग्लैंड के लिए 156 टेस्ट मैच खेले हैं। जिसमें उन्होंने 598 विकेट लिए हैं। इस दौरान एंडरसन ने टेस्ट मैच की एक पारी में 29 बार 5 विकेट प्राप्त किए हैं। इसके अलावा उनके नाम टेस्ट मैच में 3 बार 10 विकेट लेने का रिकार्ड भी है।

सीएसके ने जारी की धोनी की तस्वीर, किट बैग उठाये नजर आये

मुम्बई । आईपीएल टीम चेन्नै सुपर किंग्स (सीएसके) ने टीम इंडिया के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की एक तस्वीर साझा करते हुए कहा कि उन्हें खेलते हुए खेलने का अब और इंतजार नहीं किया जा सकता है। इसमें धोनी की मुस्कुराती तस्वीर के साथ लिखा गया है कि इस मुस्कान को देखने का आप इंतजार नहीं कर सकते। धोनी ने इस तस्वीर में कंधे पर एक किट बैग उठाया हुआ है और उन्होंने सीएके की जर्सी पहनी हुई । हाल ही में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने वाले धोनी आईपीएल के 13वें सत्र में सीएसके की कप्तानी करेंगे, ऐसे में उन्हें खेलते हुए देखने का प्रशंसकों को अच्छा अवसर मिलेगा। भारत में कोरोना वायरस के प्रभाव को देखते हुए इस बार आईपीएल को 19 सितंबर से यूएई में खेला जाएगा। इसके लिए सभी आठ टीमें यहां पहुंच गयी हैं। इन सभी खिलाड़ियों को अभी पृथकवास पर रखा गया है इसके बाद होने वाली जांच के आधार पर ही इन्हें रखा जाएगा। इस बीच पहले, तीसरे और छठे दिन उनकी जांच भी की जाएगी। तीनों टेस्ट में नेगेटिव आने वाले खिलाड़ियों को ही आईपीएल के जैव सुरक्षा वाले बायो-बबल में जाने की अनुमति मिलेगी।

बोल्ट कोरोना संक्रमित पाये गये

किंग्सटन। विश्व के सबसे तेज धावकों में शामिल जमैका के फर्राटा धावक उसेन बोल्ट कोरोना वायरस संक्रमण के लिए पॉजिटिव पाये गये हैं। इससे कई लोगों के संक्रमित होने की आशंका बढ़ गयी है। पिछले सप्ताह ही बोल्ट ने अपना 34वां जन्मदिन मनाया था, इस दौरान उन्होंने सामाजिक दूरी के नियमों का पालन भी नहीं किया और बिना मास्क लगाए ही नजर आये। जमैका के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि बोल्ट कोरोना वायरस से संक्रमित हैं हालांकि अभी उनमें किसी प्रकार के लक्षण नजर नहीं आये हैं।। बोल्ट की इस पार्टी में दिग्गज क्रिकेटर क्रिस गेल सहित कई अन्य खेलों के स्टार खिलाड़ी भी शामिल थे जो अब संदेह के घेरे में आ गये हैं। इससे पहले इस धावक ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया था, जिसमें उन्होंने कहा कि वह अपने कोरोना टेस्ट की जांच रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं।

टोक्यो में पैरालंपिक खेलों के लिए अब एक साल का समय शेष है, ऐसे में यहां एक समारोह के दौरान विशेष लाइटिंग की गयी।

हीरो की सबसे किफायती एचएफ डिलक्स बाइक के दाम बढ़े

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी बाइक निर्माता कंपनी हीरो मोटोकॉर्प ने अपनी सबसे किफायती बाइक एचएफ डिलक्स के दामों में बढ़ोतरी कर दी है। इस कम्यूटर बाइक के बेस वेरिएंट की कीमत अब 48,000 रुपये तय की गई है जो कि पहले 46,800 रुपये थी। यानी कि इस बाइक की कीमत में 1,200 रुपये का इजाफा देखने को मिला है। वहीं बात की जाए इसके एलॉय व्हील वेरिएंट की तो इसकी कीमत अब 49,000 रुपये और सेल्फ स्टार्ट वर्जन की कीमत 57,175 रुपये तय की गई है। इसके अलावा ऑल ब्लैक वेरिएंट की कीमत 57,300 रुपये और टॉप मॉडल आई3एस वेरिएंट की कीमत 58,500 रुपये रखी गई है। ध्यान देने वाली बात यह है कि यह सभी कीमतें एक्सशोरूम हैं। कंपनी ने इस बाइक की कीमत में बढ़ोतरी के अलावा इसमें अन्य कोई भी बदलाव नहीं किया है। हिरो एचएफ डिलक्स में कंपनी ने 97.2सीसी की क्षमता का सिंगल सिलिंडर युक्त फ्यूल इंजेक्टेड इंजन लगाया है जो 7.94एचपी की पावर और 8.34एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। कंपनी का दावा है कि यह बाइक 73 किलोमीटर प्रतिलीटर तक की माइलेज देती है।

लोन मोरेटोरियम की सुविधा 31 अगस्त के बाद बंद

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कोरोना वायरस महामारी को ध्यान में रखते हुए ग्राहकों की सुविधाओं के ?लिए उन्हें लोन मोरेटोरियम की सुविधा दी थी, जो अब 31 अगस्त के बाद समाप्त हो जाएगी। सरकार ने यह फैसला ?किया है ?कि अब इस सु?विधा को और आगे नहीं बढ़ाया जाएगा। आरबीआई के गवर्नर ने कहा ?कि मोरेटो?रियम एक अस्थाई कदम था ?जिसे कोरोना महामारी की मु?श्किलों से ?निपटने के ?लिए उठाया गया था। उनके मुता?बिक अब लोन ईएमआई में राहत देने का फैसला बैंकों को अपने स्तर पर लेना है।

मजबूती के साथ खुले बाजार

सेंसेक्स 38,965 और निफ्टी 23000 के पार

मुंबई। वैश्विक बाजारों में सकारात्मक रुख तथा वित्तीय कंपनियों के शेयरों में लाभ से मंगलवार को शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी की शुरुआत तेजी के साथ हुई है।। सेंसेक्स में करीब 145 अंकों की तेजी देखने को मिल रही है। दिग्गज शेयरों के साथ ही मिडकैप शेयरों में भी खरीदारी देखने को मिल रही है। बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.69 फीसदी की तेजी के साथ कारोबार कर रहा है। स्मॉलकैप शेयरों में भी खरीदारी नजर आ रही है। बीएसई का स्मॉलकैप इंडेक्स 0.67 फीसदी की बढ़त के साथ कारोबार कर रहा है। तेल-गैस शेयरों में भी आज बढ़त नजर आ रही है। बीएसई का ऑयल एंड गैस इंडेक्स 0.49 फीसदी की तेजी के साथ कारोबार कर रहा है। बीएसई का 30 शेयरों वाला प्रमुख इंडेक्स सेंसेक्स करीब 165 अंक की तेजी के साथ 38,965 के आसपास कारोबार कर रहा है। वहीं एनएसई का 50 शेयरों वाला प्रमुख इंडेक्स निफ्टी करीब 45 अंक की तेजी के साथ 11510 के पार कारोबार कर रहा है।

शुरुआती कारोबार में रुपया 15 पैसे मजबूत

मुंबई। अंतर्बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में मंगलवार को रुपया 15 पैसे की बढ़त के साथ 74.17 प्रति डॉलर पर खुला। स्थानीय शेयर बाजारों में मजबूती के रुख तथा अमेरिकी मुद्रा के कमजोर पड़ने से रुपया की धारणा मजबूत हुई। सोमवार को रुपया 74.32 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। फॉरेक्स डीलरों ने कहा कि शेयर बाजारों के सकारात्मक रुख, विदेशी कोषों के प्रवाह तथा डॉलर के कमजोर पड़ने से रुपए में तेजी आई। इस बीच डॉलर इंडेक्स 0.17 प्रतिशत टूटकर 93.14 पर आ गया। यह छह मुद्राओं की तुलना में डॉलर के रुख को दर्शाता है।

सांसद श्री शेजवलकर की अध्यक्षता में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

राज्य मंत्री कुशवाह ने शताब्दीपुरम में 8.20 करोड़ लागत की सड़क का किया भूमिपूजन

ग्वालियर। नए शहर के रूप में विकसित हो रहे शताब्दीपुरम क्षेत्र में 40 मीटर चौड़ी और 1.3 किलोमीटर लम्बी नई सड़क बनेगी। शताब्दीपुरम फेज-4 में बनने जा रही इस मुख्य सड़क मार्ग का निर्माण ग्वालियर विकास प्राधिकरण द्वारा लगभग 8 करोड़ 20 लाख रूपए की लागत से किया जायेगा। प्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री भारत सिंह कुशवाह ने मंगलवार को बतौर मुख्य अतिथि इस सड़क का भूमिपूजन किया। राज्य मंत्री श्री कुशवाह ने इस अवसर पर कहा कि ग्वालियर शहर के सुनियोजित विकास के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है। सरकार शहर के विकास कार्यों के लिये धन की कमी नहीं आने देगी। शताब्दीपुरम में अनिल भाटिया आवासीय परिसर चौराहे के समीप आयोजित हुए भूमिपूजन कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने की। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री मुन्नालाल गोयल बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधिगण तथा ग्वालियर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री के के सिंह गौर सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पनिहार टोल नाके पर सांसद शेजवलकर ने किया वृक्षारोपण

ग्वालियर। पनिहार टोल नाके के पास एनएचआई द्वारा वृक्षारोपण कराया गया। क्षेत्रीय सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने मंगलवार को पनिहार टोल नाके पहुँचकर वृक्षारोपण किया। इस मौके पर एनएचआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री राजेशचंद गुप्ता, प्रबंधक तकनीकी श्री संजय वर्मा एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने वृक्षारोपण किया और कहा कि टोल नाके के पास अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए, ताकि टोल नाके का क्षेत्र हरा-भरा और सुंदर हो सके। उन्होंने मार्ग पर भी अधिक से अधिक वृक्षारोपण का कार्य हाथ में लेने को कहा।

क्राईम ब्रांच ने 05 हजार के फरारी ईनामी बदमाश को किया गिरफ्तार

ग्वालियर। मंगलवार को पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी,भापुसे द्वारा विगत दिनांक ली गई बैठक मे जारी निर्देषों के परिपालन मे अतिऊपुलिस अधीक्षक ग्वालियर शहर पष्चिम/अपराध श्री सत्येन्द्र सिंह तोमर द्वारा अपने अधीनस्थ समस्त थाना प्रभारियों को ईनामी फरारी बदमाषों की धरपकड़ हेतु मुखबिर तंत्र विकसित करने के लिये निर्देषित किया गया था। डीएसपी अपराध श्री रवेष तोमर के मार्गदर्षन मे की जा रही कार्यवाही के दौरान दिनांक 21.08.2020 को प्रभारी क्राइम ब्रांच श्री विनोद शर्मा के निर्देषन मे सउनि0 राजकुमार राजावत को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि थाना क्राइम ग्वालियर के अप0 158/18 धारा 420, 406, 467, 468, 471 भादवि मे फरारी ईनामी बदमाष बालकिषन पुत्र अंगद सिंह धाकड़ को नवगृह कॉलोनी गोल पहाड़िया लष्कर में घूमते हुये देखा गया है। उक्त सूचना पर से तत्काल कार्यवाही करते हुए थाना प्रभारी क्राईम ब्रांच ने थाना बल की टीम बना कर मुखबिर के बताये स्थान की घेरा बंदी कर उक्त बदमाष को धर दबोचा। पुलिस पुछताछ मे बदमाष ने अपना नाम बालकिषन पुत्र अंगद धाकड़ उम्र 36 साल निवासी ग्राम बुढ़ेरा थाना गसवानी जिला, श्योपुर का होना बताया। उक्त बदमाष की गिरफ्तारी हेतु श्रीमान् पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा 05 हजार रूपये का ईनाम भी घोषित किया गया था। उक्त आरोपी थाना क्राइम के भोखाधड़ी के मामले मे विगत 02 वर्ष से फरार चल रहा था। सराहनीय भूमिका - उक्त बदमाष को गिरफ्तार करने मे थाना प्रभारी क्राईम ब्रांच उनि विनोद शर्मा, सउनि0 राजकुमार राजावत, प्रआर0 राजीव सोलंकी, आर0 सतीष परिहार, अंगद यादव, प्रमोद शर्मा, रणवीर यादव, रूपेष शर्मा, जल सिंह सिकरवार, नवीन पाराषर की सराहनीय भूमिका रही है।

खेल एकता संघर्ष युवा मंडल समिति में मुख्य अतिथि के रुप में पधारे पूर्व विधायक मुन्ना लाल गोयल ने गौरवशाली सामाजिक संस्था को किया सम्मानित।

अमित शर्मा

ग्वालियर। मंगलवार को खेल एकता संघर्ष युवा मंडल कल्याण समिति द्वारा सुरेश नगर थाटीपुर शीतला गार्डन में कोविड-19 में किए गए सराहनीय कार्य हेतु सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मुन्ना लाल गोयल द्वारा लॉकडाउन के प्रथम दिनांक से जरूरतमंदों की हर संभव मदद करने हेतु गौरवशाली सामाजिक संस्था की अध्यक्ष अधिवक्ता शिल्पा डोगरा, पत्रकारिता धर्म को निभाने के लिए सचिव गौरवशाली सामाजिक संस्था वासुदेव मिश्रा, समाजसेवी सह सचिव अधिवक्ता बरखा श्रीवास्तव, नीलम कुशवाह के अलावा पत्रकार बंधुओं, समाजसेवियों एवं कई कोरोना वीर योद्धाओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि मुन्ना लाल गोयल ने पत्रकार बंधुओं एवं समाजसेवियों का आभार व्यक्त करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं दी तथा खेल एकता युवा संघर्ष मंडल कल्याण समिति के अध्यक्ष नरेंद्र खत्री के जन्मदिन पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

सवर्ण समाज के सामाजिक संगठन के प्रमुखों ने एससी एसटी एक्ट के विरोध में सीएम शिवराज को सौंपा ज्ञापन

ग्वालियर 24 अगस्त को ग्वालियर के सवर्ण समाज के सामाजिक संगठन के प्रमुखों ने एससी एसटी एक्ट के विरोध में आज मुरार सर्किट हाउस पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को निम्न मांगो रखते हुए ज्ञापन सौंपा ज्ञापन में प्रमुख रूप से सवर्ण आयोग बनाने के साथ-साथ एक्ट के तहत दर्ज प्रकरणों की पहले सत्यता परखने के लिए प्राथमिक जांच अनिवार्य किए जाने हेतु तथा भ्रष्टाचार एवं शोषण से बचने के लिए इन प्रकरणों की विवेचना आईपीएस अधिकारी की पर्यवेक्षण में किए जाने हेतु एंव प्रकरण झूठा पाए जाने पर शासन से प्राप्त क्षतिपूर्ति राशि को मय ब्याज वसूल किया जावे तथा निर्दोष प्रताड़ित करने वालों को दंड का प्रावधान हो, के साथ-साथ संगठनों के प्रमुख पदाधिकारियों ने अपनी बात रखते हुए चेतावनी दी कि यदि एक्ट में जल्दी से जल्दी सुधार नही किया गया तो आगामी समय में संभाग में होने वाले चुनाव में सवर्ण समाज के संगठन इस आवाज को प्रमुखता से उठाते हुए विरोध करेंगे और विरोध के स्वर प्रदेश के हर गांव और शहर में पहुंचाने का काम किया जाएगा ज्ञापन सौंपने वालों में क्षत्रिय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजवीर सिंह राठौर इंजीनियर कौशल सिंह कुशवाह श्री परशुराम सर्व ब्राह्मण संघ के प्रदेश अध्यक्ष संस्थापक इंजीनियर विजय शर्मा करणी सेना के राजा चौहान सर्व ब्राह्मण महासंघ के सुनील पटेरिया सोनू सिंह राजावत क्षत्रिय महासभा से एवं दिनेश शर्मा भार्गव समाज से उपस्थित रहे

प्रकृति को बचाना हमारा कर्तव्य है-करूणा सक्सैना

ग्वालियर(अर्पित गुप्ता)। हम सब इस प्रथ्वी पर एक किराये दार है हमारा फर्ज है कि इसे आने वाली पीढ़ी सही सलामत सौंपे यह बात पार्षद नगर निगम करुणा सक्सैना ने रोट्रेक्ट ऑफ ग्वालियर रीगल द्वारा आयोजित ईको फ्रेंडली गणेशा कम्पटीशन दौरान बच्चों को जज के रूप में संबोधित करते हुई कही।क्लब अध्यक्ष आकाश बरूआ ने

बताया कि रोट्रेक्ट रीगल द्वारा यह कम्पटीशन पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया जिसमें प्रतिभागियों ने मिट्टी, और गोबर से गणपति बनाकर अपनी कलाकारी दिखाई इस कम्पटीशन में प्रथम उमा गौर तथा द्वितीय भूमि अग्रवाल रहीं।कार्यक्रम का संयोजन अश्विता बंसल तथा सहसंयोजन पुनम सिंह ने किया इस अवसर पर क्लब सदस्य आयुषी अग्रवाल ,प्रज्ञा श्रीवास्तव ,बख्शी अग्रवाल ,हनी सेंगर आदि सभी सदस्य उपस्थित रहे।

नेत्रदान पखवाड़ा शुरू

सिविल सर्जन ने नेत्रदान करने की दिलाई शपथ

ग्वालियर । आम जन को नेत्रदान के प्रति जागरूक करने हेतु 8 सितम्बर 2020 तक नेत्रदान पखवाड़े का आयोजन किया गया है। जिसका शुभारंभ आज जिला चिकित्सालय मुरार ग्वालियर में कोविड-19 के संक्रमण को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग एवं शासन के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए सिविल सर्जन डॉ. डी के शर्मा ने किया। इस मौके पर उपस्थित जनों को नेत्रदान करने की शपथ दिलाई। जिला चिकित्सालय मुरार ग्वालियर के परिसर में सक्षम संस्था एवं रेटीना अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित नेत्रदान पखवाड़े का शुभारंभ करते हुए सिविल सर्जन डॉ. शर्मा ने कहा कि नेत्रदान महादान है। इसके लिये लोगों को हमें विभिन्न माध्यमों से जागरूक करने की आवश्यकता है। नेत्रदान कर लोगों के जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। कार्यक्रम में जिला कुष्ठ अधिकारी श्रीमती डॉ. बिंदु सिंघल ने अपने उदबोधन में कहा कि जीवन में नेत्रदान का विशेष महत्व है। हम सभी का दायित्व है कि लोगों को नेत्रदान के बारे में जागरूक करें। कार्यक्रम के शुरू में आरएमओ डॉ. आलोक पुरोहित ने नेत्रदान पखवाड़े के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि नेत्रदान करने से हम नेत्रहीन व्यक्ति के जीवन में खुशहाली ला सकते हैं। रेटीना आई हॉस्पिटल के आई सर्जन डॉ. पवन सोनी, डॉ. गजराज गुर्जर ने कार्यक्रम के माध्यम से कोर्निया को कैसे व किन परिस्थितियों में डोनेट किया जा सकता है, की विस्तार से जानकारी दी।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
पुष्पांजली टुडे
वर्गीकृत फ्रीड में अगले दिन प्रकाशित होने वाले विज्ञापन की बुकिंग सुबह 10 बजे से सांय 6 बजे तक
डिस्प्ले क्लासिफाइड 25/ रु Sq.Cm.
(Min. size 5×9)
कोर्ट नोटिस / आम सूचना साइज
12×5 - 2000 रु
नि:शुल्क
बच्चों के बर्थडे एवं शादी की सालगिरह श्रंद्धाजलि शोक संदेश उठावनी
संपर्क सूत्र : 8269307478,7999246560

प्रतिभा हम निखारेंगे
अगर आपके अंदर है कोई जज्बा तो उभर कर आइये आगे आपकी लिखी हुई कहानी लेख कविताओं को हम देंगे जगह, आपके अंदर की प्रतिभाओं को हम उभरेंगे। तो देर किस बात की अभी हमे भेंजे अपनी कविता,लेख,कहानी,या फिर देख की आर्थिक स्थति या फिर स्वच्छता के ऊपर अपने विचार आप हमें व्हाट्सएप या मेल कर सकते है।
हमारा उद्देश्य - भारत को में छिपी प्रतिभाओं को बाहर निकलना।
पुष्पांजली टुडे
E-mail - pushpanjalitoday@gmail.com
Whatsapp :- 8269307478,7999246560,9691270207
नोट : मेल करते समय ध्यान रखे भेजने वाला व्यक्ति अपनी फोटो और नाम/पता/व्हाट्सएप अवश्य भेंजे

Pro- Bipin Singh Tomar
9301759475 9713253992
Mail-Vipintomar172@gmail.com
Somya Advertise & Marketing Service
Boost Your Business In Lockdow
Promote Your Business & Generate Leads
Bulk Sms & Voice call Marketing
Bulk Whatsapp Sender
Digital Marketing
Door To Door Marketing
Flex And Pritning & Printing Media
E. media, FM Redio
Add- Radha Krishna Plaza Near By Police Choki Sabji Mandi Pinto Park Gwalior (M.P.)

स्वामीअधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। पुष्पांजली प्रिंटर्स-गोवर्धन कॉलोनी, पिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से मुद्रित एवं दीपू इलेक्ट्रोनिक्स, पंजीयन क्रमांक/ एम.पी.एच.आई.एन. /31130 नियर हनुमान मंदिर, गोवर्धन कॉलोनी, पिण्ड रोड, गोला का मंदिर, ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक - भरत सिंह चौहान E-mail : pushpanjalitoday17@gmail.com 0751-4901333, M.: 8269307478